हिंदी
विवेक
" We Work For A Better World"
११ मई से १७ मई २०२० / कुल पृष्ठ : ३१

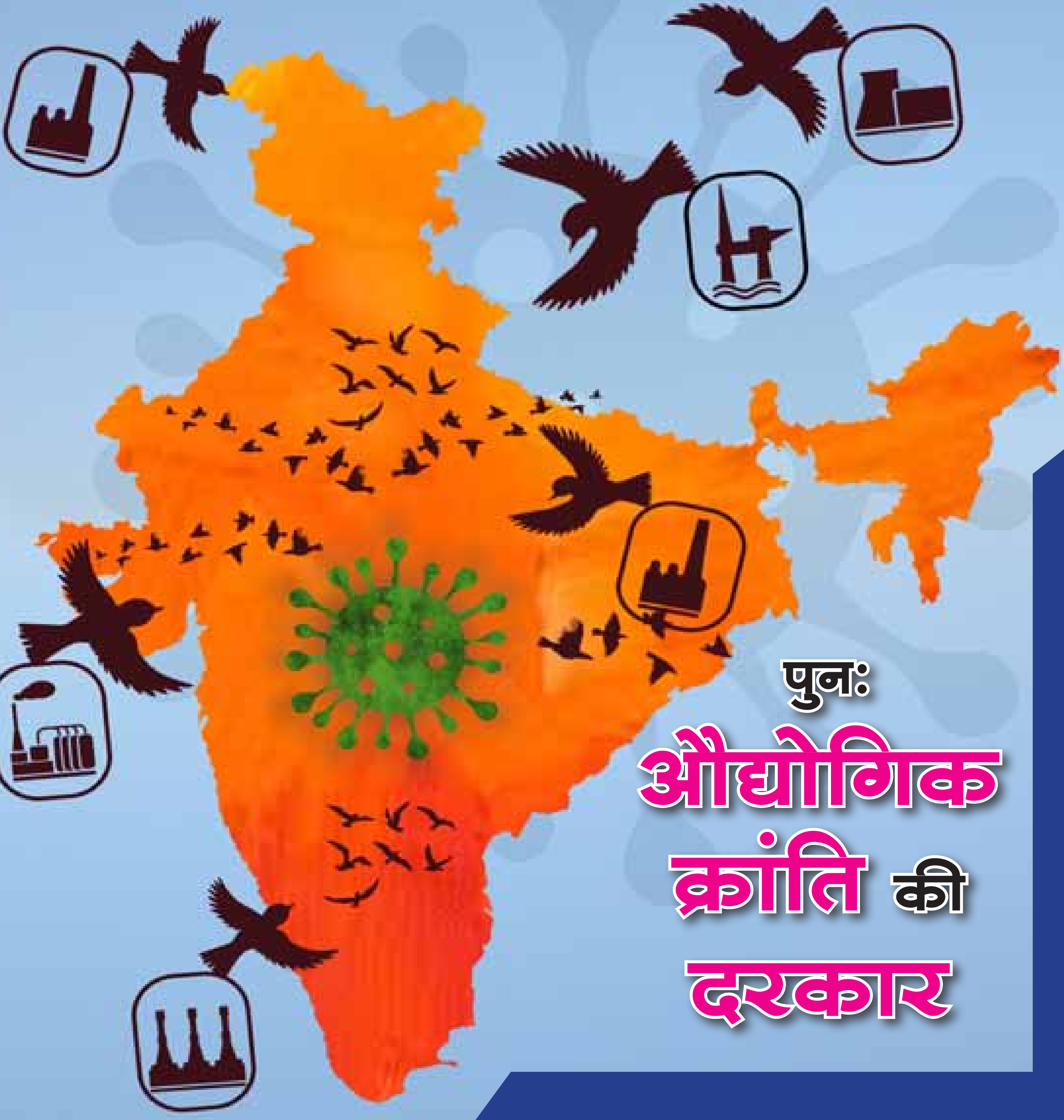

पुनः औद्योगिक क्रांति की दरकार

घर परिवार के,
हर एक के विश्वास का
आयुर्वेदिक अंजन
WESTERN INDIA CHEMICAL CO.
Jai KAJAL
जाई काजल
BOMBAY-400066 INDIA
आँखोंको शीतल, निरोगी रखकर दृष्टी स्वच्छ करके आँखोंकी थकावट दूर करनेवाला.
जाई काजल
आयुर्वेदिक अंजन
बच्चे तथा बडों के लिये समान उपयुक्त.
वेस्टर्न इंडिया केमिकल कंपनी. बोरीवली (पूर्व), मुंबई - 400066, फॅक्टरी - फोन (0250) 645 26 11

हिंदी
विवेक

" We Work For A Better World"

हंस: श्वेतो बक: श्वेत: को भेदो बकहंसयो: ।
नीरक्षीरविवेके तु हंसो हंसो बको बक: ।।

अब सोशल मीडिया पर भी

www.hindivivek.org
@hindivivek.org
@hindi_vivek
9594991884

प्रबंध सम्पादक
दिलीप करंबेलकर

मुख्य कार्यकारी अधिकारी
अमोल पेडणेकर

कार्यकारी सम्पादक
पल्लवी अनवेकर

विपणन
प्रशांत मानकुमरे

मार्गदर्शक मण्डल
रमेश पतंगे
(अध्यक्ष, हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था)
गंगाधर ढोबले
(सलाहकार सम्पादक)
संदीप आसोलकर
एड. राजीव के. पाण्डेय
वीरेन्द्र याज्ञिक

धनादेश/डिमांड ड्राफ्ट/चेक
'हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था- हिंदी विवेक' के नाम से भेजिये।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय - हुनर ही तारेगा भारत को - ४

चीन के प्रति भारतीय हित साधने की नीति हो	अमोल पेडणेकर	५
प्रयोगशालाओं से उठती उम्मीद की किरणें	डॉ. अजय खेमरिया	८
जैविक विश्व युद्ध और भारत	गंगाधर ढोबले	१०
प्रतिक्रिया	-	१५
केजरीवाल की जिद ने विपदा और बढ़ा दी	रुपेशकुमार गुप्ता	२२
कोरोना से बचने के उपाय	प्रतिनिधि	२३
बहाना	अलका अग्रवाल सिगतिया	२५

प्रतिनिधि - २८

वार्षिक मूल्य : ३०० रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : ७०० रुपये, पंचवार्षिक मूल्य : १२०० रुपये,
संरक्षक मूल्य : १५,००० रुपये, विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : ३,००० रुपये, मूल्य : ४० रुपये

हिंदी विवेक कार्यालय : यूनिट नं. १, नेहा इंडस्ट्रियल प्रिमायसेस, सु-स्वागत हॉटेल के पीछे, सुआशीष आयटी पार्क के बाजू में, दत्तपाडा रोड, बोरिवली (पूर्व), मुंबई- ४०००६६. फोन नं. : ०२२-२८७०३६४०, ०२२-२८७०३६४१, ईमेल - hindivivekedit@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

मुख्य कार्यालय : ५/१२, कामत इंडस्ट्रियल इस्टेट, ३९६ स्वा. वीर सावरकर मार्ग, प्रभादेवी, मुंबई-४०००२५. दूरभाष : ०२२-२४२२१४४०, २४२२५६३९, फैक्स : ०२२-२४३६३७५६.

प्रशासकीय कार्यालय : विवेक भवन (कृष्णा रिजन्सी), १२ वी मंजिल, प्लॉट क्र. ४०, सेक्टर क्र. ३०, सानपाडा (प.) नवी मुंबई- ४००७०५. दूरभाष : ०२२-२७८१०२३५/३६, फैक्स : ०२२-२७८१०२३७.

हुनर ही तारेगा भारत को

कोविड-१९ के लिए आज सारी दुनिया चीन को दोषी मान रही है। आर्थिक महाशक्ति बनने के लिए उसने तीसरा विश्वयुद्ध छेड़ दिया है। इस विश्वयुद्ध की न तो जमीन निश्चित है और न इसके कोई नियम कानून हैं। इसमें पारंपरिक हथियार भी प्रयोग नहीं हो रहे हैं। केवल एक वायरस के बलबूते चीन ने पूरी दुनिया को घुटने टेकने को मजबूर कर दिया और अब अमेरिका जैसे विकसित देश बौखलाए खडे हैं। कहा जा रहा है कि इसी बौखलाहट के चलते विकसित देश चीन से अपने व्यावसायिक सम्बंध घटा लेंगे। यही भारत के लिए सुनहरा अवसर होगा। चीन जो कि विश्व के लिए देश नहीं बल्कि फैक्टरी की तरह काम करता है, वहां से विदेशी कम्पनियां अपना व्यवसाय हटा लेंगी और फिर उनको ऐसे देश की जरूरत होगी जहां व्यवसाय के हर क्षेत्र की लागत कम हो और वह देश होगा भारत।

बात है तो बहुत अच्छी है परंतु वास्तविकता के धरातल पर कितनी उतरेगी यह तो भविष्य ही बताएगा; क्योंकि अव्वल तो व्यवसाय शुद्ध नफे-नुकसान को देखकर किया जाता है। उसमें भावनाओं को कोई स्थान नहीं होता और दूसरा अगर भारत को यह मौका मिल भी गया तो भारत उसके लिए कितना तैयार है? यह सुनहरा सपना कहीं मुंगेरीलाल का हसीन सपना बनकर न रह जाए इसलिए हमें अपने गिरेबान में झांकना होगा।

चीन से जो व्यापार बाहर निकलने वाला है वह मुख्यत: मैनुफैक्चरिंग इंडस्ट्री हैं। जो कम्पनियां चीन से बाहर निकलेंगी वे निश्चित ही अन्य देशों में वही गुणवत्ता चाहेंगी जो चीन देता है। क्या भारत इसके लिए तैयार है? आज की तारीख में भारत में अगर किसी सेक्टर ने सबसे ज्यादा उन्नति की है तो वह है सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री। कम्प्यूटर के सामने बैठकर कोडिंग-डिकोडिंग करने वालों की तादाद बढ़ती चली जा रही है। यह शायद इसलिए क्योंकि भारत हमेशा से ही चिंतन करने वालों का देश रहा है। दिमागी काम करने वालों की बढ़ती मांग ने हर किसी के हाथ में माउस पकड़ा दिया। अब ये हाथ रंधा, छेनी, हथौड़ी पकड़ने या खेत में ट्रैक्टर चलाने को तैयार नहीं हैं। समाज में भी अभी तक दिमाग से काम करने वालों को ऊंची निगाहों और हाथ से काम करने वालों को नीची निगाहों से देखा जाता है। सबसे पहले तो इस खाई को पाटने की जरूरत है।

इसके लिए शुरुआत करनी होगी उन शिक्षा संस्थानों से जो छात्रों को 'सोचने' के साथ-साथ 'करना' भी सिखाए। हमारे यहां क्षमता या हुनर की कोई कमी नहीं है, परंतु उन्हें मेनस्ट्रीम बिजनेस से केवल इसलिए दूर कर दिया जाता है क्योंकि वे अंग्रेजी नहीं जानते और बड़े भारी शब्दों में प्रेजेन्टेशन नहीं दे सकते। हमारे लघु और कुटीर उद्योग इसी वजह से धीरे-धीरे सिमटते चले जा रहे हैं। इन उद्योगों को भी अन्य उद्योगों की भांति यदि हर प्रकार की सहायता मिले, नई पीढ़ी यहां आने को तैयार हो तो ही आने वाले समय में भारत उस चीन की बराबरी कर सकता है जहां के बच्चे भी शारीरिक मेहनत करने से नहीं कतराते।

हमारे यहां की नई पीढ़ी अभी जिस शिक्षा व्यवस्था से गुजर रही है, वहां केवल उन्हें बनी हुई चीजों को विकसित करना या उसमें अगर कुछ कमियां रह गई हों तो उसे ठीक करना ही सिखाया जा रहा है। नया कुछ आविष्कार करने की सोच को मार दिया जाता है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि बाजार की मांग के अनुसार आपूर्ति करने में हम पीछे रह जाते हैं। निर्यात का तो छोड़िए हमारे अपने ही देश में कितने ही ऐसे आविष्कारों की आवश्यकता है। 'जुगाड़ करने में हम भारतीय अव्वल हैं' कहकर हम ही हमारा मजाक बनाते हैं, जबकि उसका दूसरा पहलू नहीं देखते कि जुगाड़ ही उस आविष्कार की पहली सीढ़ी है जो आवश्यकता के कारण उत्पन्न हुआ है। यह जुगाड़ कोई आईटी प्रोफेशनल नहीं करता, कभी-कभी तो पांचवीं फेल कोई आदमी भी कर लेता है क्योंकि उससे उसकी आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है।

कौशल विकास कार्यक्रम ऐसे ही 'जुगाडू' लोगों के लिए होना चाहिए; क्योंकि कौशल अगर होगा तो ही उसका विकास होगा। कौशल किसी में उत्पन्न नहीं किया जा सकता। चार महीने का कोर्स करके फर्राटेदार अंग्रेजी बोली जा सकती है, छ: महीने का कोर्स करके प्रेजेन्टेशन बनाए जा सकते हैं परंतु अगर वह अंग्रेजी आवश्यकता, उत्पादन और आपूर्ति के बीच का पुल नहीं बन सकी तो कोई मायने नहीं रखेगी।

अगर हम चाहते हैं कि चीन से निकलने वाली कम्पनियां भारत की ओर रुख करें और यहां टिक जाएं तो वर्तमान समाज को अपने सोचने की दिशा में परिवर्तन लाना होगा। यह सोच बदलनी होगी कि केवल कम्प्यूटर में कोडिंग करना ही उच्च शिक्षा की निशानी है। मां-बाप को अपनी पुश्तैनी कला बच्चों को सिखाकर उस कला को जीवित रखना होगा। जिन लोगों में हुनर है, कुछ नया करने का माद्दा है, उन्हें उपयुक्त सुविधाएं देनी होंगी। सरकार को मैनुफैक्चरिंग इंडस्ट्री को सहायता और बढ़ावा देने वाले नियम कानून बनाने होंगे। मजदूर यूनियनों को अपने निहित स्वार्थ से ऊपर उठकर देश के हितों में कार्य करना होगा। शिक्षा संस्थाओं पर मोटी फीस लेकर जो केवल डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजर और वकील बनाने का भूत सवार है उसे उतारकर ऐसे व्यवसायी तैयार करने होंगे जो जरूरत पड़ने पर खुद टूलबॉक्स उठाने से न कतराएं।

सौ बात की एक बात यह है कि कोरोना काल में अगर कुछ अच्छा हुआ है तो वह यह है दुनिया हमारी तरफ आशापूर्ण दृष्टि से देख रही है। उसकी आशा की पूर्ति करना हमारी आज की सोच और भविष्य के दृढ संकल्पों और योजनाबद्ध कार्यप्रणाली पर निर्भर होगा।

अमोल पेडणेकर

रणनीति

वर्तमान में विश्व में अमेरिका और चीन दो ही महाशक्तियां हैं। दोनों के सम्बंधों में इस समय गहरी दरार है। भारत के प्रति चीन का रवैया दुश्मनी का है। इसलिए हमें ऐसी नीति बनानी होगी, जो हमारे हितों की रक्षा तो करें लेकिन हम किसी के दास न बने।

चीन के प्रति भारतीय हित साधने की नीति हो

कोरोना वायरस पूरी दुनिया में अब तक चालीस लाख से ज्यादा लोगों को संक्रमित कर चुका है। २ लाख ५० हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। संपूर्ण विश्व में महामारी के साथ आर्थिक मंदी की लहर भी बड़ी जोर से चल रही है। लोगों का स्वास्थ्य और आमदनी आदि सभी बातें भगवान भरोसे हैं। यह विनाशकारी वायरस शुरू हुआ चीन से। कोरोना वायरस की महामारी को फैलाने में चीन की भूमिका को लेकर सवाल उठने लगे हैं। लगातार यह चर्चा चल रही है कि आज विश्व के सब लोग जो अपने अपने घरों में कैद हैं , क्या इसके लिए चीन जिम्मेदार है?

जब यह साफ हो गया कि यह वायरस चीन की ही देन है, तो इसे चाइनीज वायरस कहने पर चीन को बहुत बड़ा एतराज है। खासतौर पर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चाइनीस वायरस करके ही पुकारते हैं? इस पर चीन ने बहुत आपत्ति जताई है। यह चीन का दोहरा रवैया है। चीन की असलियत अब दुनिया के सामने आ चुकी है। दुनिया को भी चीन पर विश्वास नहीं है। यह वायरस चीन की लफ्फाजी का सिर्फ एक हिस्सा है। चीन की विस्तारवादी नीयत और भारत के प्रति चीन के व्यवहार को भी समझना अत्यंत आवश्यक है।

भारत और चीन में पुराने जमाने में सांस्कृतिक और वाणिज्य संबंध रहे हैं। विचारों और विद्वानों का आदान-प्रदान होता रहा है। बौद्ध भिक्खू यहां से चीन गए और उन्होंने शांति, अहिंसा और प्रेम के विचार चीन में फैलाए। उन विचारों का चीन पर बड़े अर्से तक प्रभाव रहा है। चीनी छात्र भारत के नालंदा और तक्षशिला में पढ़ने के लिए आते थे। यहां से बौद्ध दर्शन और अर्थशास्त्र के विद्वान चीन जाते थे। इस तरह से दोनों के बीच घनिष्ठ संबंध

था। कुल मिलाकर भारत और चीन के सांस्कृतिक, दार्शनिक और वाणिज्यिक संबंध थे। समय के प्रवाह में चीन के इतिहास में भी बहुत उलटफेर होते रहे। १९४९ में चीन मुक्त हुआ। चीन की मुक्ति के लिए जो स्वतंत्रता संग्राम हुआ वह कोई लोकतंत्र से प्रेरित नहीं था। वह एक कम्युनिस्ट क्रांति थी। इस कारण दुनिया के बहुत सारे देश चीन की तरफ शंकाभरी नजर से देखते थे। लेकिन भारत ने अपने पुराने रिश्तों को ध्यान में रखते हुए चीन को मान्यता दे दी। अंतरराष्ट्रीय मंच पर चीन आ जाए, वह राष्ट्रसंघ का सदस्य बने इस बात के लिए प्रयास किया। चीन के साथ अपने संबंध बने रहे इस बात पर भारत ने ध्यान दिया। भविष्य में चीन क्या प्रतिपादित करेगा इस पर भारत ने कोई विचार नहीं किया था।

भारत ने हमेशा चीन के साथ सद्भावना के साथ अपने संबंध बनाए रखने का प्रयास किया। उस समय हमारे प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने चीन के साथ उसी पुराने सबंधों के साथ सद्भावना रखी। सरदार वल्लभभाई पटेल ने उस समय चीन की नीतियों के संदर्भ में पत्र लिखकर पंडित जवाहरलाल नेहरू को सावधान किया था। उन्होंने लिखा था कि चीन के संदर्भ में अपनी नीतियां गलत हैं और उसके परिणाम आगे भविष्य में अच्छे नहीं होंगे। भारत के सोचने के तरीका और चीन के सोचने के तरीके में बहुत बड़ा अंतर है। चीन सदियों से वैश्विक विजय की दृष्टि लगाकर बैठा है। भविष्य में २०० सालों में चीन क्या कर सकता है, चीन की इतने लंबे समय को लेकर सोच हैं, इसके बारे में दूरदृष्टि की जरूरत थी। कांग्रेस के राज में तो भारत में पंचवर्षीय योजना भी ठीक से नहीं चलती थी, तो इतनी दूरदृष्टि वे क्योंकर रखेंगे।

१९५९ में दलाई लामा के तिब्बत आने के बाद हालात और बिगड़ गए। हमने दलाई लामा को शरण दी, यह हमारा धर्म था। भारत ने अपना धर्म निभाया। चीन इस बात को किस तरह महसूस करेगा इस बात पर हमने चीन पर ध्यान नहीं दिया। उस समय हमारे गणमान्य नेताओं का ध्यान सिर्फ पाकिस्तान की तरफ रहता था। उसकी नजर में उस समय भारत के लिए चीन से कोई ज्यादा संकट की बात नहीं थी। वर्ष १९६२ तक हमारी नजर में सिर्फ पाकिस्तान ही हमारा शत्रु था। १९६२ में चीन ने भारत पर हमला किया। हम गफलत में थे। हम समझ नहीं पाए कि चीन ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? हमने तो चीन के प्रति कोई अपराध नहीं किया था। कोई आक्रमण उस पर नहीं किया था। चीन को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया था।लेकिन चीन ने हम पर यह हमला क्यों किया?

इस बात पर चीन के मंतव्य को समझना अत्यंत आवश्यक है। पहली बात तो यह है की पूरे विश्व में इंडिया एंड चाइना इस बात से विचार रखा जाता था। यह बात चीन को खटकती थी। चीन को लगता था कि अगर भारत इसी तरह से चीन से आगे-आगे करता रहा तो हम भारत के पीछे ही रहेंगे। एशिया में भारत हम से आगे निकल जाएगा। भारत को थोड़ा सबक सिखाने की बात चीन ने मन में ठान ली। दूसरी बात यह है कि वर्ष १९४७ में भारत आजाद हुआ और १९४९ में चीन मुक्त हुआ। ऐसे समय में चीन हमेशा भारत से अपनी तुलना करता था। जो अपने आप को कम्युनिस्ट मॉडल के रूप में देखता था और भारत का डेमोक्रेटिक मॉडल उसे पसंद नहीं था। चीन के हमले को आप थोड़े गौर से देखिए कि उन्होंने भारत पर १९६२ में हमला किया और वापस चले गए। सिर्फ यह दिखाने के लिए चीन ने भारत पर हमला किया था, कि युद्ध के बाद जो सीख सीखनी है वह भारत सीखेगा। एशिया महाद्वीप में भारत अपने आपको चीन से कम ही नापने लगेगा।

१९६२ से १९७६ तक भारत चीन के सामने ठंडा रहा। १९७९ में जनता पार्टी की सरकार आई। तब वाजपेयी जी ने चीन के साथ संबंध सुधारने का कुछ प्रयास किया। उसके बाद २००३ में वाजपेयी सरकार आने के बाद वाजपेयी जी की चीन यात्रा हुई थी। लेकिन इस बीच चीन में आर्थिक और सामरिक प्रगति बड़ी मात्रा में हुई थी। अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में चीन अपनी ताकत दिखाने लगा था। अमेरिका चीन के बीच संबंध बढ़िया थे। अमेरिका और चीन मिलकर पाकिस्तान को मदद करते थे। एक नया कनेक्शन अमेरिका, चीन और पाकिस्तान के बीच बन रहा था। अमेरिका और चीन अपनी- अपनी अर्थव्यवस्था से बंधे हुए थे। अपने-अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों के कारण वे पाकिस्तान को सहयोग प्रदान कर रहे थे। इसलिए एक नया समीकरण एशिया महाद्वीप में बनता जा रहा था। हर देश अपने हितों को देखकर विदेश नीति बनाता है। इस बीच भारत की विदेश नीति अत्यंत कमजोर साबित हो रही थी। नतीजा यह हुआ कि १९६२ से २०१४ तक भारत चीन के बारे में कोई कारगर, प्रभावी और दीर्घावधि नीति बनाने में असफल रहा था। चीन ने सबसे पहले तो यह बात की कि एनएससी ग्रुप में भारत का विरोध किया। चीन हमेशा इस कोशिश में रहता था कि भारत का कोई भी समझौता सफल ना हो। भारत अपनी परमाणु, ऊर्जा और परमाणु ईंधन की पूर्ति न कर सके।

सवाल यह उठता है कि जिस चीन की हम हमेशा मदद करते आए हैं हमने किसी बात पर चीन को विरोध नहीं किया, चीन का भारत के प्रति यह रवैया क्यों है? क्या चीन फिर से यह दिखाना चाहता है कि चीन भारत से आगे है। भारत को चीन से आगे बढ़ने की इजाजत नहीं दी जा सकती। एशिया के क्षेत्र में चीन की एकमात्र सत्ता होगी। भारत चीन से अपनी तुलना करने की कोशिश ना करें। इस प्रकार का संकेत चीन निरंतर भारत को देना चाहता है। पाकिस्तान अपनी परमाणु शक्ति बढ़ा रहा था। तब अमेरिका क्या

चीनी खिलौने

कर रहा था? वह भारत के साथ सामरिक दोस्ती की बात करता था। लेकिन उसकी रणनीतिक दोस्ती तो अपने हितों के लिए थी।

आज परिस्थिति बदल गई है। आज चीन और अमेरिका एक दूसरे के सामने प्रतिस्पर्धी के रूप में खड़ हैं। भारत और चीन के संबंधों में भारत की दृष्टि में गुणात्मक परिवर्तन होना कांग्रेस के राज में गत ६० सालों में अत्यंत आवश्यक था। वह परिवर्तन नरेंद्र मोदी की सरकार आने के बाद ६ सालों में प्रभावी रूप से हो रहा है। चीन के बारे में हमारी क्या नीति है? चीन के साथ हम क्या करना चाहते हैं? क्या हम सिर्फ पंचवर्षीय योजना में रहना चाहते हैं? या चीन के लिए हमारा कोई नया कड़ा पैतरा है? भारत ने आज फिर से पूरे विश्व में अपना मित्र परिवार बढ़ाया है। अमेरिका आज भारत के तरफ झुका हुआ है। चीन और अमेरिका अपने औद्योगिक और व्यापारिक स्वार्थ के लिए एक दूसरे के सामने कट्टर शत्रु की तरह खड़े हैं।

तवांग और उसके आसपास १९६२ के युध्द के बाद चीनी जनसंख्या को बसाया गया है। अब चीन कह रहा है कि तवांग चीनी भाषी प्रदेश है और इसी बहाने चीन भारतीय प्रदेश में घुसपैठ की कोशिश कर रहा है। चीन ने भारत के बाजार पर अपना कब्जा जमाने का प्रयास किया हुआ है। जो भारत के आर्थिक विकास के लिए हानिकारक है। असम और पूर्वोत्तर में उल्फा, बोड़ो आंदोलन के माध्यम से जो उपद्रव स्थापित करने का प्रयास चीन लगातार कर रहा है और भारत में होने वाली ज्यादातर भारत विरोधी गतिविधियों के समर्थन में चीन खड़ा हो रहा है। इससे हमें याद रखना चाहिए कि चीन हमारा स्वाभाविक पड़ोसी नहीं रहा है। घुसपैठिया चीन हिमालय की हमारी सीमा तक आ गया है। कभी चीन अरुणाचल मांगता है, कभी पाकिस्तान से भारत पर जोर आजमाना चाहता है। १९६२ से २०१४ तक भारत अपनी सीमाओं को सिकुड़ता जा रहा था।

आज दुनिया में एक नया समीकरण बनता जा रहा है। इस बात की संभावनाओं को हम इनकार नहीं कर सकते कि कल चीन और अमेरिका में सारी दुनिया को आपस में बांट लेने की संधि ना हो जाए, जैसा कि पहले भी होता रहा है। फिर से किसी न किसी प्रांत में हो सकता है या अपने अपने स्वार्थ के लिए तीसरे महायुद्ध पर उतर आए। महाशक्तियों को जब धन और सामरिक शक्ति का अहंकार आता है तो वे दुनिया को तोड़ने और अपने हित स्थापित करने की कोशिश करती हैं। इतिहास इस बात का गवाह है। हमें अमेरिका और चीन के बीच में अपने भी वैकल्पिक संबंध बनाने अत्यंत जरूरी है। अमेरिका और चीन इन दो महाशक्तियों के बीच में हम पीसे न जाए, या उनके दास न बने इस प्रकार की योजना भारत की होनी चाहिए। अमेरिका और चीन के बीच संबंध अभी गहरी दरार की तरफ बढ़ रहे हैं। उन संबंधों को देखकर हम भारत का विकास किस प्रकार से कर सकते हैं उस पर अपनी नीति तैयार होनी चाहिए। इन सभी बातों पर वैकल्पिक नीति तैयार करने की अत्यंत जरूरी है। देश की सीमाएं वहां तक होती हैं जहां तक आप उसकी रक्षा कर सकते हैं। लेकिन चीन की विस्तारवादी नीति और अमानवीय, घातकी नीयत पर भारत को बहुत गहराई से विचार करने की जरूरत है।

९८६९२०६१०६

डॉ. अजय खेमरिया

आविष्कार

न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया में इस चीनी वायरस पर विजय पाने की जमीनी लड़ाई प्रयोगशालाओं में लड़ी जा रही है। दुआओं के समुच्चय में दवा का सृजन शीघ्र ही मानवता को इस चीनी हमले से निजात दिलाएगा ऐसी आशा है।

प्रयोगशालाओं से उठती उम्मीद की किरणें

पूरी दुनिया में करीब ४० लाख की आबादी कोविड-१९ के संक्रमण से ग्रस्त है और अनुमान है कि ३ लाख लोग अब तक इस चीनी वायरस से मौत के मुंह में समा चुके हैं। भारत में भी इन पंक्तियों के लिखे जाने तक करीब दो हजार मौतों के साथ संक्रमित मरीजों का आंकड़ा ६० हजार को पार कर चुका है। दुनिया का कोई ऐसा देश नहीं बचा जहां इस चीनी वायरस ने अपनी जानलेवा उपस्थिति दर्ज नहीं कराई हो। सरहदें अर्थ खो गई हैं और अपरिमित वैज्ञानिक पारंगता के संग उन्नत तकनीकी ने भी इस चीनी वायरस के आगे घुटने टेक दिए हैं। बाबजूद इस अप्रत्याशित संकट से मुकाबला करने के लिए दुनिया खड़ी हो रही है। लॉकडाउन के प्रथम दृष्टया एहतियात के बाद अब इसके वैक्सीन पर भी समानान्तर काम चल रहा है।

करीब दो महीने कोरोना की सर्वाधिक निर्मम मार झेल चुकी दुनिया में आशा की कुछ किरण नजर आने लगी है। भारत, जापान, इटली, अमेरिका, इजरायल समेत कुछ अन्य देश अपने यहां निरंतर अनुसंधान कर कोविड वैक्सीन के परीक्षण या विकास का दावा कर रहे हैं। हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन फिलहाल ऐसे दावों को स्वीकार नहीं कर रहा है। उसके विशेषज्ञ डॉ. डेविड निबौरो तो यह भी कह चुके हैं कि हो सकता है कोविड का टीका कभी निर्मित ही न हो। इसके पीछे एड्स और डेंगू के तर्क दिए जाते हैं जिनकी कोई वैक्सीन आज तक नहीं खोजी जा सकी है। कोविड जैसे करीब ३ लाख वायरस इस जगत में पाए जाते हैं जिनमें से कुछ की पहचान ही हम आज तक कर पाए हैं। जाहिर है वायरसों की इस खतरनाक चुनौती से लड़ना सर्वशक्तिमान मानव के लिए आज भी कठिन ही है।

इसके बाबजूद विश्व भर में खोजकर्ताओं की १०० से अधिक टीमें दुनिया में कोविड की घेराबंदी के लिए दिनरात प्रयत्नशील हैं। जापान के प्रधानमंत्री शिन्जो आबे ने दावा किया है कि उनका देश वैक्सीन निर्माण के नजदीक है। जापान ने एंटी वायरल दवा रेमेडेसिवीर के परीक्षण को मंजूरी दे दी है। अगले कुछ महीने में जापान की यह दवा वैक्सीन के रूप में सामने आ सकती है। इसी रेमेडेसिविर का परीक्षण अमेरिका में भी चल रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस साल के अंत तक अमेरिकी वैक्सीन ईजाद करने का दावा किया है। इधर भारत में भी कोविड-१९ के टीका निर्माण का शोध युद्धस्तर पर जारी है। इन पंक्तियों के लिखते समय ही भारत सरकार ने प्रमुख दवा कम्पनियों और सीएसआईआर को मिलकर नई दवा 'फेवीपीरावीर' के परीक्षण को मंजूरी प्रदान कर दी है। देश की

प्रमुख दवा निर्माता कंपनी केडिला और सीएसआईआर द्वारा सेप्सीवेक दवा का क्लिनिकल ट्रायल कोविड-१९ के मरीजों पर करने की परियोजना पर काम पहले से ही शुरू किया जा चुका है। इस ट्रायल के लिए पी जी आई चंडीगढ़, एम्स नई दिल्ली, एम्स भोपाल को चुना गया है। यह दवा रोगप्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) मजबूत करने के धरातल पर निर्मित की जा रही है। प्रधानमंत्री मोदी भी देश के शीर्ष वैज्ञानिकों से इस दिशा में अपना सम्पूर्ण पराक्रम झोंकने का आग्रह कर चुके हैं। जाहिर है उनकी अपील पर देश का वैज्ञानिक वर्ग इस दिशा में गंभीरता से लगा है और पीड़ित मानवता को इस संकट से बाहर निकालने में मददगार साबित होगा।

अपनी उच्च तकनीकी और रिसर्च के लिए मशहूर इजरायल ने भी अपने एक दावे में एंटी बॉडीज बनाने की बात कही है। उसके विदेश मंत्री नफ़ताली बैनेट ने तो इजरायल इंस्टिट्यूट ऑफ बायलोजिकल रिसर्च द्वारा विकसित एंटी बॉडीज के पेटेंट तक का दावा किया है। कोविड के संक्रमण से सर्वाधिक मौतों का ठिकाना रहा खूबसूरत देश इटली भी अब इस चीनी वायरस से लड़ने के लिए खुद को मजबूती के साथ खड़ा कर चुका है। उसके मिलान स्थित बायलोजिकल इंस्टिट्यूट के अनुसार इटली ने कोविड का वैक्सीन खोज लिया है और जल्द ही इसके नतीजे दुनियाभर के सामने होंगे। इटली के दावे की पुष्टि अरब न्यूज, एएफपी ने भी अपनी रिपोर्ट में की है। रोम स्थित इंफेक्शियस डिसीज़ स्पेलन जानी हॉस्पिटल के एक अन्य रिसर्च को इटली का सर्वाधिक प्रमाणिक शोध बताया जा रहा है। इस अस्पताल में चूहों पर किए गए परीक्षण से एंटी बॉडीज का निर्माण किया गया है। इस दवा का निर्माण करने वाली कम्पनी ताकीज का दावा है कि यह दुनिया का सबसे पहला सफल परीक्षण है और अब इसका ट्रायल मानव शरीर पर करने का काम आरंभ हो गया है।

भारत में निर्मित हैड्रॉक्सिक्लोरोक्वीन दवा के साथ इंजियोथ्रोमाइसिन का कॉम्बिनेशन भी कोविड से लड़ने वाले फार्मूलों के रूप में ट्रायल के दौर में है। जाहिर है न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया में इस चीनी वायरस पर विजय पाने की जमीनी लड़ाई प्रयोगशालाओं में लड़ी जा रही है। दुआओं के समुच्चय में दवा का सृजन शीघ्र ही मानवता को इस चीनी हमले से निजात दिलाएगा ऐसी आशा है।

●●●

९४०७१३५०००

जैविक विश्व युद्ध और भारत

गंगाधर ढोबले

अर्थव्यवस्था

कोरोना की महामारी के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में नए-नए मॉडल विकसित होंगे। समय के साथ कदम मिलाने के लिए यह अनिवार्य शर्त है। इसकी बुनियाद बनाने का काम मोदी सरकार के जिम्मे है। अर्थव्यवस्था निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और जिसकी अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, वही राज करेगा।

कोरोना महामारी देरसबेर जानी ही है। कोई चीज शाश्वत नहीं होती। इसके पहले भी ब्लैकडेथ, प्लेग, स्पैनिश फ्लू, हैजा, चेचक, कालाज्वर, ई-बोला जैसी महामारियां आईं और चलती बनीं। आज की तरह ही उस समय भी हाहाकार मचा था। उस समय भी शारीरिक दूरी, हाथ-मुंह धोना, अपनी स्वच्छता रखना, भीड़ से दूर रहना, मास्क लगाना ही एकमात्र रास्ता था, क्योंकि इन महामारियों की कोई दवा ही नहीं थी। यहां तक कि १९३० तक लोगों को पता ही नहीं था कि कोई सूक्ष्म परजीवी विषाणु ऐसी महामारी का कारण होता है। लेकिन विषाणु की खोज ने चिकित्सा विज्ञान को पूरी तरह बदल डाला। जीवाणु और विषाणु को अंग्रेजी में बैक्टीरिया और वायरस कहते हैं। विषय-विस्तार के भय से इसे यहीं विराम देता हूं।

कोरोना के साथ भी ऐसा ही है। जब इसकी दवा आ जाएगी तब लोगों में फिर सामाजिक प्राणी पेंगे भरेगा। दूरी, हाथ धोना, मास्क लगाना, भीड़ से बचना ये सारी बातें भूल जाएंगे। यह स्वाभाविक भी है, लेकिन संकट जो अवसर भी लाता है, वह सारी दुनिया का व्यवस्था-तंत्र बदल देगा। हमारे जीवन के तौर-तरीके बदल जाएंगे। शिक्षा से लेकर मनोरंजन और उद्योग-व्यापार से लेकर सामाजिक व्यवस्था तक क्रांतिकारी बदलाव आ सकते हैं। क्रांतिकारी का मतलब स्तंभित करने वाले बदलाव, जिसे किसी ने आज सोचा भी नहीं है। कारोबार के नए-नए मॉडल प्रस्तुत होंगे, तो सामाजिक सरोकार भी बदल जाएंगे। अर्थ-तंत्र केंद्र में होगा। महाशक्तियां इस पर कब्जा करने की कोशिश करेंगी। जिसके हाथ में बाजार होगा वही दुनिया का दरोगा बनेगा। इसलिए बाजार को झपटने की गलाकाट होड़ शुरू हो जाएगी। पारंपारिक हथियार काम नहीं आएंगे, जैविक हथियार याने कोरोना जैसे विषाणु मारक सेना बन जाएंगे। कहते

हैं, रूस ने भी एंथ्रेस जैसे बेहद खतरनाक विषाणु को बड़ी-बड़ी फ्रीजों में डालकर सायबेरिया के बर्फ में किसी गुप्त स्थान पर गहराई में गाड़कर रखा है। ऐसे विषाणुओं के नए-नए अवतार प्रयोगशालाओं में जन्म लेंगे। इसकी कल्पना तक आज असंभव है। यहां तक कि इंटरनेट के जरिए जिस तरह आपके कंप्यूटर में डिजिटल वायरस भेजा जाता है, या एमी जैसे सॉफ्टवेयर के जरिए दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर आपका कंप्यूटर ठीक किया जा सकता है या बिगाड़ा जा सकता है, वैसे ही ऐसा कोई शीघ्रगामी छद्मी वाहन अवतीर्ण होगा, जो यकायक खुली आंखों को नहीं दिख पाएगा और आपके किसी यंत्र ने पकड़ भी लिया तो उसे डी-कोड करने में मुश्किल आएगी। वह क्षण में आपको बर्बाद कर देगा। इसका सुरक्षा कवच जिसके पास होगा उसकी पौबाराह! इस तरह विषाणु और उसका कवच जिसके हाथ लगेगा वह राज करेगा। दोनों को ध्वस्त कर पाने की क्षमता रखने वाला सिरमौर होगा।

यही पृष्ठभूमि है अगले विश्व और अंतरिक्ष युद्धों की। इस पर गहराई से गौर करें तो क्या आपको नहीं लगता कि तीसरे विश्व युद्ध की चीन ने शुरुआत कर दी है? अमेरिका जैसी पहले नम्बर की महाशक्ति को किस तरह उसने धूल चटा दी- एक पिद्दी से विषाणु के संक्रमण से। पारंपरिक अस्त्र सब नाकाफी हो गए। यह कोई पहली बार नहीं हुआ है इस दुनिया में। दूसरे विश्व युद्ध में अमेरिका शामिल नहीं था। वह तो मित्र देशों को हथियार बेचकर धन बटोर रहा था। इस कड़ी को तोड़ने के लिए जापान ने अमेरिका का पर्ल हार्बर ध्वस्त कर दिया, और फिर अमेरिका ने जापान पर परमाणु बम बरसाकर उसे घुटने टेकने को मजबूर कर दिया, यह कहानी हम सब जानते हैं; लेकिन इस कहानी में एक और मोड़ यह भी है कि जापान ने खतरनाक ब्लैकडेथ जीवाणु कैलिफोर्निया में फैलाने की योजना बनाई थी, जो अमेरिकी गुप्तचरों को पता चल गई और फिर अमेरिका ने आव देखा न ताव और जापान पर परमाणु बम बरसा दिए। यह सच्चाई है या धुप्पल इसे पता करने का कोई जरिया नहीं है। मुद्दा केवल इतना ही है कि जैविक हथियारों का इस्तेमाल बहुत पहले से सोचा जा रहा है। जैविक हथियार बनाने के आरोप में ही अमेरिका ने इराक को रौंद डाला और सद्दाम हुसैन का खात्मा कर दिया। भारत में तो विषकन्याओं की बात हम जानते ही हैं। वे भी जैविक हथियार ही थीं।

समय सब को बदल देता है। विश्व का भूगोल हमेशा बदलता रहा है। समय उसे मिटा देता है, नई रेखा खींच देता है। वैसे ही विश्व में कोई सदा सुपर पावर बना नहीं रह सकता। कभी भारत सोने की चिड़िया था। बाद में ग्रीक, स्पैनिश, पुर्तुगाली, अंग्रेज आए। जर्मन, इतालवी, जापानी भी ताकतवर बने। रूस, अमेरिका में बराबर की कुश्ती थी। चीन तब दुबका हुआ था। वर्तमान में रूस होड़ से बाहर हो गया है। अमेरिका व चीन आमने-सामने हैं। कोरोना ने चीन के लिए धंधा पैदा किया, अमेरिका लुट गया। अमेरिका के इटली, स्पेन, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड जैसे दोस्त भी कहीं के नहीं रहे। यही युद्ध की पहली चिंगारी है, जो महामारी के जाते ही भभक उठेगी। वैसे पश्चिमी देशों ने चीन से माल मंगाने पर हाथ खींच लिया है, यह कोई महज व्यापारिक घटना नहीं है। चीन ने भी कह दिया है कि हम अब डॉलर में सौदा नहीं करेंगे, चीनी मुद्रा युआन में ही करेंगे। इससे अमेरिकी डॉलर अब विश्व व्यापार की इकलौती मुद्रा नहीं रही है, उसका मूल्य टूटता जाएगा। यह दूसरी चिंगारी है युद्ध की, जो राख में दबी हुई है। तीसरी चिंगारी है, कोरोना के कारण चीन से पलायन करती पश्चिमी देशों की कोई एक हजार से ज्यादा विशाल बहुराष्ट्रीय कम्पनियां। चीन भी फिर पश्चिमी देशों, खासकर अमेरिका से अपनी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हटा देगा। इन्हें यदि हम भारत ला सके तो हमारे कारोबार में नई जान आ जाएगी। बड़े पैमाने पर भारत में पूंजी आई तो रोजगार और आमदनी दोनों के अनगिनत अवसर पैदा होंगे। चीन इससे नाराज हो सकता है, लेकिन आज भी वह कौन हमारा साथी है? कूटनीति में कोई किसी का स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता। भूगोल की तरह दोस्त-दुश्मन भी हमेशा बदलते रहते हैं।

अब प्रश्न यह है कि इस परिदृश्य में भारत कहां होगा? भारत की भविष्य की अर्थव्यवस्था किस तरह काम करेगी? किस तरह के नए मॉडल अपनाने होंगे? यह बदलाव किन-किन क्षेत्रों में होगा? कितने दिन चलेगा और कब फल देगा? ऐसे कई प्रश्न हैं। आज जिनकी कल्पना तक नहीं है, ऐसे नए प्रश्न भी निर्माण होंगे। इसके लिए पहले अर्थव्यवस्था के मूल पहियों को समझना होगा। यह भी जान लेना होगा कि किसी के भी पास जादुई छड़ी नहीं है, जो दाएं घुमाए तो देश सोने से लहलहा उठेगा और बाए घुमाए तो देश के दुश्मनों या समस्याओं का एक झटके में अंत हो जाएगा। अर्थव्यवस्था का विकास एक निरंतर चलने वाली प्रदीर्घ और लचीली प्रक्रिया है। इसकी मजबूत नींव बनाना वर्तमान के हाथ में है। जैसी नींव होगी, वैसे ही भविष्य फल देगा।

यह पृष्ठभूमि समझ लें तो बहुत सारे भ्रम दूर हो जाएंगे। अर्थव्यवस्था के तीन महत्वपूर्ण चक्र हैं- कृषि, उद्योग और सेवा। इन क्षेत्रों को असंख्य छोटे-छोटे शीर्षों में बांटा जा सकता है। जैसे कृषि को पारंपारिक खेती, व्यावसायिक खेती और वैज्ञानिक खेती में बांटा जा सकता है। उद्योग पहले से मूलभूत उद्योग और विनिर्माण उद्योग में विभाजित हैं। मूलभूत उद्योग उन्हें कहते हैं जो पूरी तरह सरकार के अधीन हैं जैसे कि भारी उद्योग, खनिज और कोयला उत्पादन, परमाणु ऊर्जा आदि। विनिर्माण

में शेष सभी उद्योग जैसे कि जीवनावश्यक वस्तु विनिर्माण, वाहन, चिकित्सा उपकरण निर्माण, निजी व औद्योगिक आईटी उत्पादन आदि उद्योग आते हैं, जो निजी उद्यमियों के हाथों में होते हैं। अब इनका मुंह पारंपारिक उत्पादन की बजाए भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार उत्पादन करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान की गति तीव्र करने की ओर मोड़ना होगा। जो इसमें चूक जाएंगे, उन्हें समय दफन कर देगा। अर्थव्यवस्था का तीसरा क्षेत्र है सेवा। यहां सेवा का मतलब धर्मादा या चैरिटी नहीं है। श्रम के बदले पारिश्रमिक लेना है। यहां प्रत्यक्ष किसी वस्तु का उत्पादन नहीं होता। वस्तु इधर से उधर पहुंचाई जाती है या उसकी मरम्मत की जाती है। होटल, पर्यटन इसीमें आते हैं। इसे आतिथ्य उद्योग भी कहते हैं। अस्पताल भी सेवा उद्योग के अंग हैं। आपके घर आकर बिजली ठीक करने वाला या नल ठीक करने वाला या शिक्षा संस्थान, अथवा मैं यहां तक कहूं कि घर में पूजा-पाठ के लिए आने वाला पंडित भी सेवा उद्योग का ही हिस्सा है, केवल अपने पारिश्रमिक को वह दक्षिणा कहता है। ये सारे लोग आजकल आधुनिक औजारों का इस्तेमाल करते हैं, यहां तक कि पंडितजी भी ऑनलाइन पूजापाठ करवाते हैं। तात्पर्य यह कि भविष्य के भारत की अर्थव्यवस्था अधिक वैज्ञानिक होगी, उसमें तीव्र गति से निरंतर बदलाव करने पड़ेंगे, दूसरों से एक कदम आगे रहने की कोशिश करनी होगी। हर उद्योग की आवश्यकताएं अलग होंगी, कोई समान मॉडल बनाना संभव नहीं है। उदाहरण के लिए वाहन उद्योग में असेम्ब्ली लाइन होती है। पतरों को आकार देकर उनमें पुर्जे जोड़ने और अंत में पेंटिंग कर वाहन बाहर आता है। वैसे भी इस उद्योग में बेहद तीव्र गति से बदलाव हो रहे हैं। आज का कार मॉडल कल बासी हो जाता है। इसलिए लागत घटाने और गुणवत्ता बढ़ाने वाले नए-नए अनुसंधानों पर बल देना होगा।

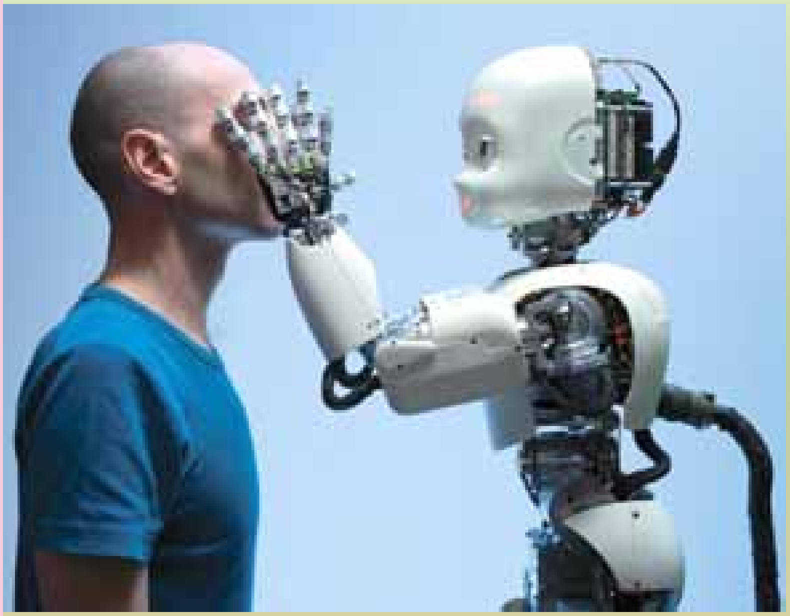

वाहन और अंतरिक्ष सबसे बड़े उद्योग बन जाएंगे। खनिजों के नए-नए परिष्कृत स्वरूप सामने आएंगे। अब हमारी वसुंधरा से कम ही खनिज लिया जाएगा, सौर-मंडल के अन्य ग्रहों से खनिज लाए जाएंगे। कार्य-संस्कृति पूरी तरह बदल जाएगी। आज घर से काम करने को सुविधा माना जा रहा है। यह कल सुविधा नहीं रहेगी। आपको ऐसे घर में रहना होगा, जहां अतिरिक्त कमरा हो जिसका दफ्तर की तरह उपयोग किया जा सके; ताकि परिवार और काम को पृथक रखा जा सके। ऐसे श्रम कानून बन सकते हैं, जिसमें कर्मचारी को मानसिक दबाव से बचाने के लिए कंप्यूटर की लॉकिंग सिस्टम लगानी होगी। दफ्तर का समय होते ही कर्मचारी का कंप्यूटर स्वयं लॉक हो जाएगा, जो दूसरे दिन नियत समय पर ही खुलेगा। वाहनों ने तो आज ही बदलना शुरू किया है। ड्राइवरविहीन कार आरंभिक चरण में है। उसके कंप्यूटर में स्थान आदि डाल दें तो जीपीएस के सहारे वह आपको गंतव्य पर पहुंचा देगी और वह भी बिना किसी दुर्घटना के। सड़क, पानी और हवा तीनों में चलने वाली कारों के प्रयोग आज ही हो रहे हैं। यह क्षेत्र और तेजी से विकसित होगा। सबसे बड़ा बदलाव शिक्षा के क्षेत्र में होगा। आज की अध्ययन और अध्यापन प्रणाली पूरी तरह बदल जाएगी, विषय भी गहन होते जाएंगे और उनमें नित्य संशोधन करना होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उसका माध्यम होगा। इसका मतलब है ऐसा रोबोट जो आपको पहचान लें और जिन्न की तरह आपके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो और आपसे कहे- क्या हुक्म है आका? अर्थव्यवस्था के हर छोटे-बड़े क्षेत्र में आमूल बदलाव आएंगे। यह विषय इतना दीर्घ है कि इस पर हजारों किताबें लिखी जा सकेंगी।

भारत को इस भविष्य को समझना होगा और उसकी नींव डालनी होगी। वर्तमान मोदी सरकार के जिम्मे यही राष्ट्रीय काम है। नई व्यवस्था में वैज्ञानिक अनुसंधान ही मूलाधार होंगे। यह बदलाव एक दिन में नहीं होंगे, लेकिन शुरुआत अवश्य करनी होगी। इसकी मजबूत नींव बनानी होगी। सरकारें आती-जाती रहेंगी, लेकिन राष्ट्र की यह दिशा नहीं बदलनी चाहिए। वैभवशाली भारत का यही मूलमंत्र है। इसलिए कि जो शक्तिशाली होगा वही वजूद पाएगा जैसे कि डार्विन का सिद्धांत है- Survival of the FITTEST.

●●●

९९३०८००४५३

पितांबरी®
देवभक्ती®
अगरबत्ती
शनी उपासना
साढ़ेसाती
का डर सताएं ?
लगातार बिमारियाँ ?
आर्थिक हानी ?
पढाई में रुकावट ?
साढ़ेसाती से परेशान
शादी में विलंब ?
नोकरी में दिक्कत ?
कोर्ट कचेरी से बेहाल ?
गुरुतत्त्व सेवक ज्योतिषाचार्य
श्री. संतोष जोशी द्वारा
सिफारिस की हुई।
दूरभाष क्र. ९९२०३८३९९५
साढ़ेसाती बाधित राशी
धनु, मकर, कुंभ
पितांबरी शनी उपासना अगरबत्ती
राहत दिलाएं!
देवभक्ती
शनी उपासना
साडेसाती स्पेशल
धनु, मकर, कुंभ
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Thane: 022 - 6703 5555, CRM: 022 - 6703 5564, 5699, All India: 8452001602, CIN: U24239MH1989PTC051314,
Toll Free: 18001031299, Shop Online: www.pitambari.com/shop & www.amazon.in

THE KALYAN JANATA SAHAKARI BANK LTD.
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
MULTI STATE SCHEDULED BANK

परंपरा व तंत्रज्ञानाचा
सुयोग्य समतोल साधणारी बँक
अतूट विश्वासाची ४६ वर्षे

मोबाईल बँकिंग | इंटरनेट बँकिंग | एस.एम.एस. अलर्ट | मिस्डकॉल बँकिंग
बचत खाते (शून्य शिल्लक खाते | किशोर किशोरी खाते | युवा खाते) | चालू खाते | विविध ठेव योजना (कर बचत ठेव योजनेसह)
चालू खाते | विविध ठेव योजना (कर बचत ठेव योजनेसह) | वैयक्तिक कर्ज | तारण कर्ज | व्यावसायसाठी कर्ज

मुख्य कार्यालय
कल्याणमस्तु, ओम विजयकृष्ण अपार्टमेंट, आधारवाडी रोड, कल्याण ४२१ ३०१ फोन क्र. (०२५१) २३१५९९५/२३१६६४१

Toll Free : 1800 233 1919 KJSBank www.kalyanjanata.in

कोरोना के बाद की आर्थिक परिस्थितियों पर मान्यवरों के मत

पिछले करीब २ महीनों से लॉकडाउन के कारण हमारे सभी उद्योग बंद हैं। इसका भारत की अर्थव्यवस्था पर सीधा असर होने वाला है। भारत की अर्थव्यवस्था, यातायात, उद्योग-धंधे सब एक दूसरे पर निर्भर हैं। जब तक कुछ एक भी बंद है, अर्थव्यवस्था गति नहीं पकडेगी। भारत की अर्थव्यवस्था कब तक पटरी पर आएगी और इसका भविष्य कैसा होगा इसके बारे में अलग-अलग मत हैं। हमने इस अंक में उद्योग, आर्थिक जगत, सहकार जैसे विविध क्षेत्रों के जानकारों से बात करके यह जानने की कोशिश की है कि उनके उद्योगों तथा भारत की अर्थव्यवस्था के भविष्य के बारे में उनकी क्या राय है।

सहकारी बैंकों के लिए पैकेज बेहद जरूरी

एड. जे. पी. मिश्रा
अध्यक्ष, जनसेवा सहकारी बैंक

बैंकों के २०१९ - २०२० के तुलन-पत्र (बैलेंस शीट) बहुत ही नुकसानदेह दिखाई देंगे। आगामी जुलाई माह तक बैंकों का कामकाज पूरी तरह से शुरू होने की कोई संभावना दिखाई नहीं दे रही है। बैंकों में खानापूर्ति के लिए २० से २५ प्रतिशत कर्मचारी आते हैं। कर्ज लेने के कोई नहीं है। कोई डिपॉजिट नहीं आते। मुक्त गतिविधियां नहीं हैं। उद्योग-धंधे बंद होने के कारण कोई ऋण मांगने भी बैंकों में नहीं आ रहा है। लॉकडाउन समाप्त होने के बाद भी लोगों को इससे उबरने में लंबा समय लगेगा। उनकी गाड़ी पटरी पर आने के बाद ही धंधे-रोजगार को गति मिलेगी।

सहकारी बैंक हो या राष्ट्रीय बैंक, वर्ष २०२० - २०२१ का कालखंड संघर्ष भरा रहने वाला है। अधिकतर बैंक घाटे में ही जाएंगे, मुनाफे की बात तो छोड़ ही दीजिए। रिजर्व बैंक को बैंकों की मौजूदा स्थिति के बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए। मेरा सरकार से आग्रह है कि बैंकों की डूबती आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए और व्यवस्थित रूप से बैंकों के संचालन हेतु राहत पैकेज देने पर विचार करें। ताकि सहकारी बैंक इस मुश्किल वक्त में संघर्ष करने के काबिल बन सके। अन्यथा बैंकों का बचना कठिन हो जाएगा। बहरहाल इस संकट से उबरने और बैंकों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए हम प्रयासरत हैं और इसके लिए हमने सभी शाखा प्रबंधकों से इस संबंध में व्यापक चर्चा की है। मैंने उनसे कहा है कि एक वर्ष का लक्ष्य ९ माह में कैसे पाया जाए, इस दिशा में अपना ब्ल्यूप्रिंट तैयार करें। मैंने उनसे कहा है कि जमा पूंजी कैसे बढ़ाई जाए, निवेश के कौन-कौन से रास्ते खुले हुए हैं, आपके क्षेत्र में किन उद्यमियों को ऋण की आवश्यकता है ऐसे लोगों की सूची तैयार करें। घर बैठे ही हमने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक कर कई प्रकार की योजनाएं और पूर्व तैयारी कर ली है। जैसे ही लॉकडाउन समाप्त होगा, वैसे ही हम तेज गति से कार्य की ओर अग्रसर होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे।

मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि जान भी और जहान भी। हमें उनकी बातों पर अमल करते हुए उपयुक्त एहतियात बरतते हुए अपने जान के साथ ही जहान को बचाने के लिए काम करना होगा। कोरोना वायरस के साथ संघर्ष करते हुए हमें जीना होगा। इस संदर्भ में सकारात्मक रुख अपनाते हुए तमाम जरूरी सावधानियां बरतते हुए हम अपने काम को आगे बढ़ाएंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे।

भारत और मजबूती से उभरेगा

वेदप्रकाश गर्ग
ट्रांसपोर्ट व्यवसायी, मुंबई

जब-जब भारत पर संकट आया है तब-तब भारत ने पूरी ताकत से उसका मुकाबला किया है और संकटों पर मात करते हुए अखिल विश्व को मार्ग दिखाया है। कोरोना संकट के समय भी भारत की अद्भुत क्षमता का दर्शन विश्व को हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने कोरोना संक्रमण पर न सिर्फ काबू पाया है बल्कि इससे निपटने के लिए विश्व का मार्गदर्शन करने के साथ ही जरूरी दवाइयों सहित अन्य मेडिकल सुविधाओं की आपूर्ति भी कर रहा है। भारत के डीएनए में ही मानवता और विश्व बंधुत्व की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान पर परमाणु बम गिराकर उसे पूरी तरह से तबाह कर दिया था और उसकी कमर तोड़ दी थी। बावजूद इसके राष्ट्रभक्त जापानियों ने अपने अदम्य साहस और कड़े परिश्रम, प्रतिभा के बल पर फिर से अपने राष्ट्र को शक्तिशाली देश के रूप में खड़ा किया बल्कि दुनिया की आर्थिक शक्ति के रूप में भी उभर कर दुनिया के सामने आया। उसी तरह भारत भी सवा सौ करोड़ भारतवासियों के दम पर स्वयं को कोरोना संकट के नुकसान से उबार लेगा और दुनिया के समक्ष महाशक्ति के रूप में उभरेगा।

मजदूरों के पलायन के कारण उद्योग धंधे प्रभावित जरूर होंगे लेकिन लॉकडाउन के खुलने के कुछ समय बाद सभी वापस लौट आएंगे। मैं एक ट्रांसपोर्ट व्यवसायी हूं। लॉकडाउन के चलते मेरा व्यवसाय पूरी तरह से ठप पड़ा हुआ है। आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। लेकिन फिर भी मैं निराश नहीं हुआ हूं। इस एकांतवास का लाभ उठाकर मैंने योग के माध्यम से आध्यात्मिक व शारारिक रूप से स्वयं को शक्तिशाली बनाया है। मुझे स्वयं पर भरोसा है कि लॉकडाउन खुलते ही मैं और अधिक उत्साह से अपने व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित कर पाऊंगा और परिश्रम की पराकाष्ठा कर आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयास करूंगा। मेरा सकरत्तमक दृष्टिकोण ही मेरी सफलता की गारंटी है।

दुनिया का औद्योगिक केंद्र बनेगा भारत

अजित मनियाल
डायमंड व्यापारी, मुंबई

चुनौतियों को अवसर के रूप में परिवर्तित करना यह हर भारतवासी का परम कर्तव्य होना चाहिए। मुझे लगता है कि भारतवासियों में यह अद्भुत क्षमता है। सवा सौ करोड़ भारतवासियों की श्रम शक्ति के आधार पर भारत फिर से उठ खड़ा होगा और देश दुनिया का नेतृत्व करेगा।

जब भी हमारे शरीर में बुखार आता है तो हमें यह संकेत देता है कि संभल जाओ। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। उसी तरह कोरोना संक्रमण का संकट भी हमें संभलने का मौका दे रहा है। यह संकेत दे रहा है कि सावधानीपूर्वक भविष्य की तैयारी करो, आपका वर्तमान और भविष्य उज्ज्वल है। जैसे स्पीडब्रेकर हमारी ही सुरक्षा व फायदे के लिए होता है, ठीक उसी तरह कोरोना नामक स्पीडब्रेकर हमारे राष्ट्र के लिए हितकर साबित होगा। बस हमें सावधानी बरतते हुए अपने लक्ष्य को हासिल करना है। इस वायरस के कारण पूरी दुनिया में चीन बुरी तरह से बदनाम हुआ है और चीन से दुनिया भर की बड़ी - बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां चीन छोड़कर भारत आने का मन बना चुकी हैं। यह हमारे लिए बेहतरीन सुनहरा अवसर है। इस अवसर का लाभ उठाना ही हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

मैं डायमंड व्यापारी हूं। मुंबई के बीकेसी स्थित डायमंड मार्केट में रोजाना ५० हजार कर्मचारी आते थे। इससे मुंबई के लाखों परिवार जुड़े हुए हैं। निर्यात पूरी तरह से ठप पड़ा हुआ है। कर्मचारी अपने घरों में बैठे हुए हैं। लेकिन जब बाजार खुलेगा तब हम एक नई ऊर्जा के साथ अपने व्यापार को बुलंदियों पर लेकर जाने का पूर्ण प्रयास करेंगे। भारत में भले ही ४जी चल रहा है लेकिन दुनिया के साथ कदमताल करने के लिए हम ६जी की गति से काम करेंगे। लॉकडाउन के कारण हमने एकांतवास में स्वयं को आंतरिक रूप से सशक्त किया है। अपनी आत्मशक्ति को पहचाना है। पहले की अपेक्षा अब हमारा मनोबल और अधिक मजबूत हुआ है। राष्ट्र के आर्थिक पहिये को गति देने के लिए हम भी अपना पूर्ण योगदान देंगे, ताकि देश जल्द से जल्द आर्थिक नुकसान से उबर जाए।

मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत कोरोना के खिलाफ जंग को जरूर जीतेगा और हमारा प्राचीन सनातन राष्ट्र दुनिया में विश्व विजेता के रूप में सामने आएगा। प्रधानमंत्री मोदी जी का प्रखर नेतृत्व, देश का वातावरण और सस्ते श्रमिकों की अति उपलब्धता दुनिया भर की कम्पनियों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उपयुक्त है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के कारण भारत के प्रति दुनिया का दृष्टिकोण सकारात्मक है। व्यापारी चाहे हमारे देश का हो या दुनिया के किसी भी देश का हो, उसका लक्ष्य केवल आर्थिक लाभ होता है। वह सर्वप्रथम यह देखता है कि किस देश में व्यापार करने से हमें मुनाफा होगा। उस लिहाज से चीन के बाद एकमात्र भारत ही व्यापार की दृस्टि से दुनिया में सबसे उपयुक्त है। दुनिया के दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश भारत में अपार कुशल मानव संसाधन, प्रतिभा से संपन्न युवा और सस्ती श्रम शक्ति यहां आसानी से उपलब्ध है इसलिए बहुत जल्द ही भारत दुनिया का औद्योगिक केंद्र बनेगा।

निवेश के लिए बेहतर विकल्प है उत्तराखंड

ऊर्बा जोशी
संयोजक, भाजपा, उत्तराखंड प्रकोष्ठ, मुंबई

देवभूमि के रूप में विश्व विख्यात उत्तराखंड राज्य अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से देश दुनिया के पर्यटक यहां आते जाते रहते है। इसी तरह औद्योगिक क्षेत्र में भी उत्तराखंड देश में बेहतर विकल्प के रूप में उभरा है। यहां का शुद्ध वातावरण एवं मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत का पारदर्शी शासन सहित सस्ती श्रमशक्ति तथा प्रतिभावान युवाशक्ति राज्य को सम्पन्न बनाते है। इसलिए किसी भी विदेशी कंपनी के लिए उत्तराखंड उनका पसंदीदा राज्य बन सकता है। पानी, बिजली, सड़क और सरकार का सहयोग विदेशी कम्पनियों के लिए सोने पर सुहागा साबित होगा। जानकारी मिली है कि कोरोना वायरस के कारण विदेशी कम्पनियां चीन से निकल कर भारत में अपने उद्योग धंधे लगाना चाहती है। ऐसी कंपनियों के लिए भारत सहित उत्तराखंड राज्य किसी वरदान से कम नही है। यहा पर बेहद सरल प्रक्रियाओं से गुजर कर आसानी से उद्योग धंधे लगाए जा सकते है।

तकनीक आधारित शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दें सरकार

करुणाशंकर उपाध्याय
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय

कोरोना के संकट से शिक्षा क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित हुआ है, जिसके चलते करोड़ों छात्रों की शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। परीक्षाएं रद्द करनी पड़ी हैं। बावजूद इसके एक प्राध्यापक होने के नाते हम अपने उत्तरदायित्वों का पूरी निष्ठा से पालन करते हुए तकनीक की सहायता से छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, यूट्यूब, रिकॉर्डिंग एवं दूरभाष आदि माध्यम से हम विद्यार्थियों को पढ़ा रहे हैं, उनका कक्षाएं ले रहे हैं। अध्ययन सामग्री उन तक पहुंचा रहे हैं। इसके अलावा पीएच. डी. के विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

आगामी समय में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिलेंगे। ऑनलाइन शिक्षा सामग्री अधिक मात्रा में कैसे उपलब्ध हो, ऑनलाइन परीक्षाएं कैसे हो, ऑनलाइन पाठ्यक्रम कैसे पढ़ाये जाए, इस दृष्टि से बड़े परिवर्तन होने की उम्मीद है। लॉकडाउन की स्थिति में सभी अपने घरों में बैठे हुए हैं। लेकिन हम निष्क्रिय नहीं बैठे हैं बल्कि पहले की ही तरह सक्रिय भूमिका निभाते हुए अपने कार्यों में लगे हुए हैं। हमने हाल ही में बीते दिनों दो 'वेबिनार' का आयोजन किया था, जिसमें छात्रों सहित विद्वान लोगों को इससे जोड़ा था और इस दौरान शोध प्रक्रिया पर भी चर्चा की थी। वर्तमान विश्व व्यवस्था की जो स्थिति है उस पर भी विचार-विमर्श किया था। इसके अलावा आलोचना की जो नई पद्धतियां हैं, समकालीन विमर्श हैं उस पर भी विस्तार से बात की थी। ज्ञान - विज्ञान के जो नवीनतम साधन और उपलब्धियां हैं, उस संदर्भ में छात्रों को अद्यतन रखना बेहद आवश्यक है इसलिए हम तकनीकी साधनों के माध्यम से कार्य कर रहे हैं। हमारे मार्ग में चाहे किसी भी प्रकार की बाधा आए लेकिन हमें रुकना नहीं है, थकना नहीं है बस राष्ट्र विजय की कामना लेकर आगे ही बढ़ते जाना है।

आगामी समय तकनीक आधारित और तकनीक केंद्रित व्यवस्था रहने वाली है। इसलिए सरकार से हमारा निवेदन है कि शिक्षा जगत में सुविधा के लिए तकनीक आधारित शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दें और इस दिशा में योग्य कदम उठाए; ताकि किसी भी स्थिति में छात्रों को शिक्षा से वंचित न रहना पड़े। बता दें कि किसी भी देश की प्रगति और आर्थित उन्नति शिक्षा पर ही अवलंबित होती है। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में जो भी आवश्यक कदम उठाने चाहिए वे जल्द से जल्द उठाए जाने चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में समय की मांग के अनुरूप सरकार को नई शिक्षा नीति लागू करनी चाहिए।

व्यवसाय में टिके रहना सबसे बड़ी चुनौती

अजित मराठे
पूर्व मैनिजिंग डायरेक्टर,
निर्माण ग्रुप

औद्योगिक क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों का आगामी एक वर्ष का समय बहुत ही संघर्ष भरा रहनेवाला है। ऐसे मुश्किल भरे वक्त में बहुत ही सावधानीपूर्वक कदम बढ़ाने की जरूरत है। मैं अपने औद्योगिक मित्रों से यह कहना चाहता हूं कि आप अपने मुनाफे का विचार न करते हुए केवल बाजार में टिके रहने पर ध्यान केंद्रित करें। यदि आपका व्यवसाय कायम रहे तभी एक वर्ष बाद आने वाले अवसरों का आप पूरा लाभ उठा पाएंगे। यदि आपका व्यवसाय और उत्पादन क्षमता एवं आपकी रचनात्मकता ही नहीं बचेगी तो आप आगामी सुनहरे मौकों का आप फायदा नहीं उठा पाएंगे। रियल इस्टेट के क्षेत्र में भी इसी तरह की स्थिति बनी रहेगी। एक साल बाद जैसे ही इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ेगा, नई - नई कम्पनियां भारत आएंगी वैसे ही मांग बढ़ने वाली है। लेकिन तब तक बाजार में टिके रहना बेहद जरूरी है। इस कोरोना संकट के पूर्व ही रियल इस्टेट का धंधा मंदा पड़ा हुआ था। कई मेरे ऐसे डेवलपर्स मित्र हैं जो दिवालिया होने की स्थिति में है। मुझे ऐसा लगता है कि केंद्र और राज्य सरकार की ओर से कई सारे राहत पैकेज आएंगे, जिसका लाभ लेने की स्थिति में हम सभी को रहना चाहिए और इसके लिए स्वयं को तैयार करना चाहिए। इसलिए यह अत्यावश्यक है कि कुछ भी करो लेकिन अपने उद्योग व्यवसाय में टिके रहो। यह मंत्र आने वाले समय में सफलता की कुंजी है।

आगामी समय में मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र में काफी उछाल आने वाला है। यदि आप इस क्षेत्र में है तो टिके रहिए, आपको बहुत ही अच्छा मौका मिलेगा। इसके अलावा हम सभी को नए - नए आयाम, नए - नए तरीके, नए - नए पद्धतियां विकसित करनी पड़ेगी। चाहे मार्केटिंग हो या फाइनेंस, तकनीक आधारित एवं ऑनलाइन मार्केटिंग द्वारा ही हमें व्यापार की रणनीति बनानी होगी। 'आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है' की तर्ज पर हमें नई तकनीक खोजनी होगी। समय के साथ हो रहे बदलावों पर पैनी नजर बनाकर मांग के अनुरूप व्यवसाय के कई सारे अवसर तलाश सकते हैं।

लालफीताशाही टूटे तो चमत्कार हो जाएगा

यशवंत सिंह
वाइस प्रेसिडेंट सेमसोनाइट
साउथ एशिया

मैं सैमसोनाइट साउथ एशिया लिमिटेड में वाइस प्रेसिडेंट के पद पर कार्यरत हूं। सैमसोनाइट से जुड़े सभी उत्पादों के उत्पादन और वितरण का मैं प्रभारी हूं। पर्यटन से जुड़े हुए उत्पाद हम बनाते हैं। जिसमें सूटकेस, हैंड बैग आदि शामिल हैं। अमेरिकन टूरिस्टर ब्रांड भी हमारा ही है। कोरोना संकट एवं लॉकडाउन का पर्यटन पर सर्वाधिक परिणाम हुआ है। हमारा पूरा व्यापार पर्यटन पर ही आधारित है। इस वर्ष हमारे व्यापार पर प्रतिकूल परिणाम होंगे। लगभग एक वर्ष तक हमारे पर्यटन से जुड़े उत्पादों की मांग बेहद कम रहेगी। वर्ष २०२१ के बाद से ही मांग में तेजी दिखाई देगी, ऐसा हमारा आकलन है। जैसे ही मांग बढ़ेगी हम अपना उत्पादन बढ़ा देंगे। जो बाजार में टिके रहेगा वही आने वाले मौका का लाभ उठा पाएगा।

हमारे देश में टैलेंट और परिश्रम करने वालों की कोई कमी नहीं है। बस हमारी आत्मशक्ति, इच्छाशक्ति एवं विचारशक्ति को सही दिशा में आगे बढ़ाने की दरकार है। हमारे सामने आई सबसे बड़ी चुनौती को हम अवसर में तब्दील कर सकते हैं। अब समय आ गया है कि हम आयातक की भूमिका को छोड़कर निर्यातक बनने की ओर अग्रसर हो। हमें आत्मनिर्भर बनने के लिए स्वयं का एक इको सिस्टम विकसित करना होगा। माहौल भले ही हमारे खिलाफ दिखाई दे रहा हो लेकिन उसके पीछे बहुत बड़े अवसर हैं। इन मौकों का फायदा उठाने के बीच लालफीताशाही सबसे बड़ी अड़चन है। सरकार के विचार व योजनाओं को जमीनी स्तर पर लागू करने के दरम्यान काफी अंतर रह जाता है। यदि इस अंतर को खत्म किया जा सके तो मुझे लगता है कि देश के सामने बहुत अच्छा मौका है आगे बढ़ने का और दुनिया के सामने खुद को साबित करने का। दुनिया भारत के पहल का स्वागत करने को बेकरार है। भारत क्या कदम उठाएगा, दुनिया की नजरें इसी बात पर टिकी हुई हैं। चीन की जगह भारत दुनिया की जरूरतें पूरी करे, यही अपेक्षा दुनिया भर के देश भारत से कर रहे हैं। कुछ लोग भारत की तुलना अमेरिका सहित अन्य देशों से कर रहे है जो कि बिल्कुल गलत बात है। विकसित देशों की तुलना विकासशील देशों से कैसे की जा सकती है? उनकी प्रति व्यक्ति आय हमसे बहुत अधिक है। भारत जैसे विकासशील देश के सामने समस्याएं व चुनौतियां बहुत अधिक हैं। लोग यह भूल जाते हैं कि हम १३० करोड़ आबादी वाले देश है। हम अभी २.५ ट्रिलियन की इकोनॉमी है और हम १५ ट्रिलियन की इकोनॉमी से तुलना नहीं कर सकते। दुनिया भारत को एक व्हाईट इलेफंट के रूप में देखती है उनका मानना है कि एक बार यह व्हाईट इलेफंट चल देता है तो इसको रोकना किसी के बस में नहीं है। मुझे भारतीयों की आत्मशक्ति, विचारशक्ति, इच्छाशक्ति एवं प्रतिभाशक्ति, युवाशक्ति पर पूरा भरोसा है। भारत सबसे कम समय में अपनी अर्थव्यवस्था को संभाल लेगा।

जरूरी सावधानियों के साथ उद्योग शुरू हो

डॉ. श्रीकांत पाटील
केमिकल टेक्नॉलॉजिस्ट,
इनडिपेंडंट कन्सल्टंट, केमिकल इंडस्ट्री

हम सिंथेटिक मार्बल्स, फायबर ग्लास व टाइल्स के उद्योग से जुड़े हुए हैं। जैसे - जैसे शहरीकरण बढ़ता है, कॉलोनियां बढ़ती हैं, घरों का निर्माण होता है तो उसमें बड़ी संख्या में टाइल्स का इस्तेमाल होता है। भारत में शहरों के विकास कार्य इतने तेज गति से नही चल रहे हैं जितने तेज गति से अमेरिका, यूरोप और मध्यपूर्व में चल रहे है। वहां पर नवीनीकरण का काम चलता ही रहता है। इसलिए वहां पर हमारे उत्पादों की बहुत ज्यादा मांग है। भारत में तो केवल २० प्रतिशत के करीब ही हमारे टाइल्स का व्यापार होता है, बाकी ८० प्रतिशत हमारा विदेशों में निर्यात होता है। हर माह २०० कंटेनरों द्वारा अमेरिका सहित यूरोप में हमारे टाइल्स का निर्यात किया जाता है। जब तक उद्योगों के कामकाज सहित परिवहन को शुरू नहीं किया जाता तब तक हमारा व्यापार पूरी तरह से ठप पड़ा रहेगा। उद्योगों में कई प्रकार के कार्य एक दूसरे पर अवलंबित होते हैं। मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि जरूरी सावधानियां एवं सोशल डिस्टेंसिंग का निर्देश देते हुए कुछ हद तक औद्योगिक क्षेत्र को कामकाज की अनुमति देनी चाहिए और इसके साथ ही परिवहन सेवा शरू करनी चाहिए ताकि उत्पादों की आपूर्ति की जा सके। इससे उद्योगों को कुछ राहत जरूर मिलेगी। जिस तरह कोरोना के खिलाफ लड़ने वाले डॉक्टरों, मेडिकल स्टाफ, पुलिस, मीडियाकर्मियों एवं सफाईकर्मियों को पीपीई किट, मास्क, हैंड ग्लोव्स आदि सुरक्षा सामग्री देकर उनसे काम कराया जा रहा है, उसी तरह के सुरक्षा इंतजाम कर एवं अन्य उपाय योजना कर जरूरी उद्योगों को भी काम करने की अनुमति देनी चाहिए। जिससे आम आदमी और मजदूरों की आर्थिक परेशानियों को दूर किया जा सके। इसके अलावा लघु उद्योग और असंगठित कामगारों के लिए भी सरकार को कुछ जरूरी कदम उठाने चाहिए ताकि वह संघर्ष करने के काबिल बने और उन्हें भी कुछ राहत मिले।

भारत दुनिया के बाजारों पर काबिज हो

सतीश मराठे
केंद्रीय निदेशक, रिझर्व्ह बैंक

भारत १३० करोड़ की आबादी वाला देश है और दुनिया का बहुत बड़ा बाजार है। यदि हम सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए कोरोना संकट के बीच स्वयं को बचाए रखते हैं तो भारत का बाजार हमारी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में सक्षम है। केंद्र और राज्य सरकारों सहित रिजर्व बैंक के द्वारा उठाए जाने वाले महत्वपूर्ण कदमों से उद्योग व्यवसाय समेत सभी आर्थिक क्षेत्रों को उबरने में मदद मिलेगी। देश में अनेक प्रकार के परिवर्तन आएंगे। वैसे भी हमारा देश परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। हमें नवोन्मेष, अनुसंधान एवं प्रयोग द्वारा अधिक मात्रा में उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करना होगा। हमें अपने उत्पाद को सबसे बेहतरीन, टिकाऊ और सस्ते दामों पर दुनिया के बाजारों में पंहुचाना होगा। जिस तरह चीन अपने सामानों को दुनिया भर के बाजारों में ठेल देता है, उसी तरह भारत को भी अपने उत्पाद दुनिया भर के बाजारों में डंप करने की स्थिति में आना होगा।

स्वदेशीकरण को बढ़ावा देते हुए इंडिया फर्स्ट की नीति को प्राथमिकता देते हुए मेड इन इंडिया का दम दुनिया को दिखाने के लिए हमें अपनी कमर कसनी होगी। दुनिया की नजर में भारत एक बहुत बड़ा बाजार है। हमें अपनी इस छवि को तोड़कर दुनिया को बाजार बनाना होगा और भारत को आयातक की जगह निर्यातक की भूमिका में आना होगा तभी हम दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बन कर उभरेंगे। बता दें कि विदेशी मीडिया द्वारा जानबूझकर यह भ्रम फैलाया जा रही है कि कोरोना संकट और लॉकडाउन के कारण भारत में भुखमरी की नौबत आ सकती है। देश में खाद्यानों की कमी हो सकती है। इस धुप्पल के पीछे वामपंथियों का भी हाथ हो सकता है क्योंकि भारत में इस तरह की झूठी बातें वही फैला रहे हैं। मैं उनकी खबरों का पूर्णतः खंडन करता हूं। और देश को आश्वस्त करता हूं कि हमारे देश में भुखमरी की स्थिति नहीं आएगी। देश में खाद्यान्न बड़ी मात्रा में मौजूद है।

जनसेवा सहकारी बँक (बोरिवली) लि.

प्रशासकीय कार्यालय : "गिरीराज", डॉ. डी.जी. पालकर मार्ग, बोरिवली (पश्चिम), मुंबई - ४०० ०९२.
दूरध्वनी - २८३३८००४ फॅक्स : २८९९८८४२, ई-मेल : jssbl@mtnl.net.in वेबसाइट - www.janasevabank.in

विविध ठेव योजना

★ मुदत ठेव योजना (Fixed Deposit Scheme)
★ धनश्री योजना (Dhanashree Yojna)
★ मासिक / त्रैमासिक व्याज योजना (Monthly / Quarterly Interest Scheme)
★ (Auto Renewal Scheme)

आवर्त ठेव योजना (Recurring Deposit Scheme)

लखपती ठेव योजना (Lakhpati Deposit Scheme)

कर्ज योजना

व्यवसाय कर्ज (Business Loan)
सोने तारण कर्ज (Gold Loan)
गृहकर्ज (Home Loan)
तारण कर्ज (Mortgage Loan)
वाहन कर्ज (Vehicle Loan)
शैक्षणिक कर्ज (Education Loan)
वैयक्तिक कर्ज (Personal Loan)

रुपे डेबिट कार्ड
(भारतात १,७५,००० ए.टी.एम. मशिनद्वारे पैसे काढण्याची सुविधा उपलब्ध)

ग्राहकांसाठी उपलब्ध सुविधा

निधि हस्तांतरण (Funds Transfer - NEFT & RTGS)
थेट समाशोधन (Direct Clearing),
सी.बी.एस. (CBS), ए.टी.एम. (ATM),
एस.एम.एस. (SMS) व लॉकर (LOCKER)सुविधा

जीवन विमा / जनरल विमा / आरोग्य विमा
Corporate Agent of :
LIC & SBI Life Insurance
Bajaj Allianz General Insurance
HDFC ERGO General Insurance
Religare Health Insurance

मुद्रांक शुल्क (Stamp Duty),
नोंदणी शुल्क (Registration Fees),
व्यवसाय कर (Professional Tax),
आयकर (Income Tax),
थेट (Online) भरण्याची सुविधा

आमच्या शाखा :- (१) बोरिवली (पश्चिम), (२) दहिसर (पूर्व), (३) कांदिवली (पश्चिम), (४) बोरिवली (पूर्व), (५) चारकोप (६) मालाड (पश्चिम), (७) कांदिवली (पूर्व), (८) भाईंदर (पूर्व), (९) गोरेगाव (पूर्व), (१०) गोरेगाव (पश्चिम), (११) अंधेरी (पश्चिम) (१२) विरार (पश्चिम) व (१३) वसई (पश्चिम) शाखा

METAL POWER

Improve performance and profitability with solutions from India's #1 spectrometer makers

Market leader with more than 50% market share

Metavision 10008X

Low and sub-PPM analysis for all elements including O_2, H_2, N and ROHS elements; 99.995%+ purity in pure metals!

Metavision 1008i[3]

Low and single PPM level detection of 40+ elements; Gaseous elements (including low C and N) and ROHS elements; 99.99+% purity in pure metals

Metavision 108NN+

High flexibility and robustness at unbelievable economy; 30+ elements across 11+ bases (pure metals and alloys); includes N in steels

SPARTAN

Lowest cost OES in the world; Ideal for routine applications across alloy manufacturers including CI, SGI, Brass and Aluminium alloys

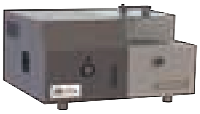

Metavision 1008M

Powerful, mobile solutions for positive material identification (PMI) and sorting with integrated touchscreen and long-life batteries

H SCAN

Rugged, accurate and traceable analysis of H_2 in molten Aluminium – highest accuracy in just 3 minutes and at a cost of < INR 5 per analysis!

INTEG SP

Protect your instruments from a variety of issues including Short Circuits, Over Voltage, High Surge, Earth Leakage etc.

Other high precision products and accessories from Metal Power Analytical:

Wide range of Certified Reference Materials from the only accredited solid metal CRM manufacturer in Asia

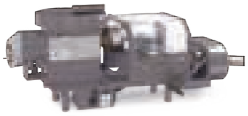

SPMs: Sample Preparation Machines

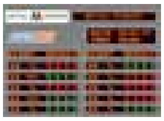

RTDS: Remote Transmission/ Display System

Long-life sampling moulds

Wire adapters (0.4 mm onwards)

1,200+ Spectrometer installations across 30+ countries	25+ years of dedicated serivce to the metals industry	The fastest growing spectrometer company in the world	Ensuring the highest level of customer satisfaction

METAL POWER ANALYTICAL (INDIA) PVT. LTD.
Metal Power House, 87, Marol Industrial Estate, Andheri (East), Mumbai - 400 059. BHARAT (INDIA).
Tel: +91 22 4083 0500 | E mail: sales@metalpower.net | Web: www.metalpower.net

Z&B 170009

50
व्या वर्षात दमदार पदार्पण
DNS BANK
डोंबिवली नागरी सहकारी बँक लि.
(मल्टी-स्टेट शेड्यूल्ड बँक)
अर्थाला विश्वास मिळे अन् विश्वासाला अर्थ मिळे!
: @7045456655 : 1800 233 1700
गुढी पाडवा
त्यौहार को और भी ख़ास बनाने के लिये
लोन ब्याज दरों में आकर्षक कटौती...
फेस्टिवल धमाका
गृह कर्ज योजना
विशेष योजना | ब्याज दर 7.85%* से शुरु
अन्य आर्थिक संस्थाओं से लिया गया लोन डीएन्एस् बैंक में शिफ्ट करें और
कम ब्याज दरों का लाभ लें (ब्याज दर 8.25% से शुरू)
वाहन कर्ज योजना
ब्याज दर
फोर-व्हीलर 8.65%* से शुरू
टू-व्हीलर 8.50%* से शुरू
100%* लोन
सुवर्ण कर्ज योजना
सोने के गहनों पर तुरंत लोन
आसान, सुविधाजनक और तेज़ प्रक्रिया
वैल्युएशन चार्जेस या अन्य शुल्क नहीं
ब्याज दर 9.75%*
*नियम व शर्तें लागू
कोई प्रोसेसिंग शुल्क नहीं | योजना सीमित अवधि के लिये वैध।
Web: www.dnsbank.in | Email: enquiry@dnsb.co.in | : /DNSBankLtd | : @DnsBank

रुपेशकुमार गुप्ता

कोरोना

केजरीवाल की दिल्ली को खोलने की जिद ने इस विपदा को और बढ़ा दिया है। ऐसे में दिल्लीवासियों को अपनी सुरक्षा का दायित्व खुद उठाना होगा।

केजरीवाल की जिद ने विपदा और बढ़ा दी

कोरोना वायरस का प्रकोप महाराष्ट्र और गुजरात के बाद दिल्ली में सबसे ज्यादा हैं। कोरोना वायरस से जुड़ी हेल्थ अपडेट देने वाली रिपोर्ट की बात माने तो दिल्ली में हर १० लाख व्यक्ति में से ३१५ लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हैं।

भारत में अब लॉकडाउन का तीसरा चरण चल रहा है। दिल्ली में दूर-दूर तक कोई आशा की किरण नजर नहीं आ रही है क्योंकि राजधानी के सभी ११ जिले खतरनाक घोषित हैं। ८ मई तक, भारत में ५६,३४२ से अधिक मामले सामने आए हैं और लगभग १६,५४० मौतें हुईं हैं। दिल्ली में ५,९८० से अधिक मामलें हैं और ६६ लोगों की मृत्यु हुई हैं। इसके अलावा ८ मई को इसमें ४०० से ज्यादा मामले सामने आए हैं।

नई दिल्ली राज्य में सबसे अधिक प्रभावित जिला है। इसके बाद मध्य दिल्ली और उत्तर-पश्चिम दिल्ली हैं जहां मामले लगातार बढ़ रहे हैं। इस बीच दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार लॉकडाउन प्रतिबंधों को कम करने की तैयारी कर रही है और उसने केंद्र से केवल संक्रमित क्षेत्रों को रेड जोन घोषित करने का अनुरोध किया है न कि पूरे जिले को। गृह मंत्रालय के दिशानिर्देशों के अनुसार हरे और नारंगी क्षेत्रों, जिलों में कुछ राहत दी गई हैं।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कुछ राहत उपायों की घोषणा की थी लेकिन स्पष्ट संकेत के साथ कि राज्य में तालाबंदी अगले दो सप्ताह तक जारी रहेगी। उन्होंने कहा था, 'दिल्ली को फिर से खोलने का समय आ गया है। हमें कोरोना वायरस के साथ रहने के लिए तैयार रहना होगा। हमें इसकी आदत डालनी होगी।'

गौरतलब है कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने नई दिल्ली में लॉकडाउन के दिशानिर्देशों का ठीक से पालन नहीं करने के लिए दिल्ली की जनता को दोषी ठहराया हैं। लेकिन मेरा मानना है कि राज्य की चुनी हुई अरविंद केजरीवाल की सरकार कोरोना वायरस के प्रसार को नियंत्रित करने में विफ़ल रही है। इसके पीछे कारण यह है कि लॉकडाउन के सिद्धांतों का पर्याप्त रूप से पालन नहीं करने के कारण यह स्थिति बनी है।

निजामुद्दीन मरकज के कारण भी यह दिल्ली में फैला हैं। इसके चलते बड़े पैमाने पर लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हुए। इस पर ध्यान नहीं देने के कारण भी दिल्ली में परिस्थिति विस्फोटक हो गई है।

मजदूरों को पलायन करने के लिए मजबूर करना भी एक कारण बना हैं। इसके चलते भी लोगों में संक्रमण बढ़ा है और केजरीवाल की सरकार ने उनमें भ्रम फैलाकर इस विपदा को बड़ा बनने का मौका दिया है।

शराब के ठेकों के खुलने के बाद जिस प्रकार शराबियों ने लाइन लगाकर दिल्ली में कोरोना बांटा है इसके भी दूरगामी परिणाम होंगे और परिस्थिति को नियंत्रित करना मुश्किल होगा। अब केजरीवाल की दिल्ली को खोलने की जिद इस विपदा को और बढ़ाएगी। ऐसे में दिल्लीवासियों को अपनी सुरक्षा का दायित्व खुद उठाना होगा।

९८२०३०९५७२

प्रतिनिधि

नुस्खा

कोरोना के साथ रहना हमें सीखना ही होगा। जब तक इसकी दवा नहीं आती तब तक ऐसा ही रहेगा। अपने स्वास्थ्य को संभालते हुए कामकाज करना होगा। समस्त महाजन संस्था के चेअरमैन गिरीशभाई शाह ने ऐसा दिनक्रम जिसे अपनाकर आपका स्वास्थ्य और कामकाज दोनों चलता रहेगा।

कोरोना से बचने के उपाय - गिरीशभाई शाह

कोरोना लॉकडाउन और बढ़ गया है इसी माह की १७ तसारख तक। जब तक कोई दवाई या कोई टीका नहीं मिलता है तब तक कोरोना का खौफ रहेगा। मान लीजिए, लॉकडाउन खुल भी गया तो भी हमें सावधानी तो रखनी ही पड़ेगी। वैसे तो अन्य बीमारियों और दुर्घटनाओं इससे ज्यादा लोग मरते हैं तो कोरोना से क्यों डरना? डरने की सिर्फ एक ही वजह है कि यह मनुष्य से मनुष्य को संक्रमित होने वाला रोग है। तो करें क्या? कब तक घर पर बैठे रहे?

विमलनाथ भगवन के स्तवन की कुछ सुंदर पंक्तियां हैं-

अवसर पामी आलस करसे, ते मुरखमाँ पहेलोजी
भूख्याने जेम घेबर देतां हाथ न मांडे घेलोजी
सुंदर अवसर है, आलस करके गंवाए नहीं।
जीवन अमूल्य है। आलस करके गंवाए नहीं।

हमारे प्रधानमंत्री ने कहा है- योगासन, प्राणायाम, आयुर्वेद, घरेलू उपचार इन सबसे हमें हमारी प्रतिकार शक्ति बढ़ानी है।

दिनक्रम कुछ ऐसा होना चाहिए-

सुबह ब्रह्ममुहुर्त - ४.३० बजे जागृत होकर स्वच्छता के पश्चात् ध्यान-प्रतिक्रमण सामायिक करना है।

सूर्योदय से ४८ मिनिट तक योगासन सूर्य के सामने करना है। सूर्य नमस्कार करना है। खुले में, घर के आंगन में या छत पर जाकर सूर्य की सुबह की किरणों में योगासन करने से विटामिन बी-१२ भी मिल जाएगा।

नवकारशी के समय ब्रश करते वक्त एक चम्मच तिल का हल्का गरम तेल लेकर तीन मिनट मुंह में घुमाए और गरम पानी से कुल्ला करें।

काढ़ा-उकाला गर्म पानी में लेना है। सोंठ (सूखे अद्रक का पावडर) पानी में या गुड़-घी के साथ ले सकते हैं। काढ़े में तुलसी, दालचीनी, काली मिर्च एवं मुनक्का डालना है।

उसके बाद स्नान-स्वच्छ होकर इष्टदेव-परमात्मा की पूजा भक्ति करें।

गोल्डन दूध यानि हल्दी चूर्ण डालकर १५० मिली दूध पीएं।

च्यवनप्रकाश लेना है १० ग्राम और हल्का नास्ता घर का बनाया हुआ ही खाइए।

फिर सुबह ९ बजे अपने-अपने काम में लग जाए। जैसे विद्यार्थी अभ्यास में, स्त्रियां घरकाम में और पुरुष वर्ग अपने-अपने बिजनेस को घर बैठे कैसे कर सकते हैं उसका आयोजन करें।

११ बजे एक लिंबू गर्म पानी में नमक- चीनी- जीरा- सोंठ डालकी पीएं।

दोपहर १ बजे परिवार के साथ आनंद के साथ भोजन करें। घर बैठे हैं इसलिए हल्का घर का बनाया हुआ भोजन ही खाएं, बाहर का कुछ भी न खाएं।

आयुर्वेद का एक बहुत अच्छा सूत्र है - अशाकभुका। मतलब भोजन में हरी सब्जी का प्रयोग कम करें।

भोजन बनाने में हल्दी, जीरा, धनिया का प्रयोग करें।

भोजन के पश्चात १५ मिनट वामकुक्षी मतलव आराम करें।

२.३० बजे मुंह धोकर काम पर लग जाएं, या वाचन करें - अच्छी पुस्तकें पढ़ें।

४ बजे काढ़ा-उकाला पीएं।

शाम ६ बजे हल्कासा भोजन करें और गोल्डन दूध पीएं।

सुबह शीरामण (मतलब शीरा), दोपहर भोजन, शाम को दूध के साथ भोजन स्वस्थता की ओर ले जाता है।

७ बजे इष्टदेव की, परमात्मा की भक्ति करें। बाद में कुछ मनोरंजन भी हो जाए।

१० बजे रात्रि विश्राम करें।

चिकित्सा

- दांत समुद्री नमक के पावडर से साफ करें।
- आंख में घी की दो बूंद सुबह शाम डालें।
- नस्य -नाक के दोनों छिद्रों में सुबह-शाम तिल का तेल लगाएं।
- दोनों कानों में रात को सोते वक्त हल्का गर्म तिल तेल की दो बूंद डालें।
- नाभि-मलद्वार-मूत्रद्वार पर घी की दो-दो बूंद रात को सोते वक्त लगाए।
- दिन में एक बार गरम पानी में अजवाईन डालकर भांप लें।
- खांसी या गले में खराश हो तो लौंग के चूर्ण में गुड़ मिलाकर दिन में तीन बार लें।
- सोंठ पावडर जीभ पर रखकर रस मुंह में उतारें।

  सोंठ पावडर थोड़ा सा लेकर नाक से सूंघें।
- पूरे दिन में जितनी ज्यादा मात्रा में सूंठ ले सकें उतनी जरुर लें।
- पथादीक्काथ + दशमूलक्काथ निम्बत्वक का प्रक्षेप त्रिकूट लें।
- तुलसी दो चम्मच रस + दो काले मिर्च का पावडर सुबह शाम लेना है।
- सुबह शाम घर में धूप करें।
- धूप में गोबर के कंडे + घोड़ावज - गूगल- सरसव- नीम के पत्ते + गाय का घी डालें।
- जंकफ़ूड - ठंडे कोल्डड्रिंक्स ओर फ्रिज का पानी मत पीजिए।
- फ्रिज में रखी हुई कोई भी चीज नहीं खाना।
- मूंग, मसूर, चना, कलथी का सूप लेना।
- सब्जी में करेला, परवल, दूधी, सरगवो, हल्दी, सोंठ, पुदिना लीजिए।
- फल सिर्फ देशी पपैया, अनार और आमला लीजिए।
- फल, सब्ज़ी, अनाज, सभी आर्गोनिक खाएं।
- मांस, मच्छी, अंडे का त्याग करना।
- सम्पूर्ण शाकाहार अन्नाहार अपनाए।
- हल्दी, नमक के गर्म पानी से कुल्ला करना।
- आर्सेनिक अल्बम ३० पोटेन्सी ४ गोली सुबह शाम सात दिन ले शकते हैं।
- स्वस्थ रहें, स्वच्छ रहें, नीतिनियमों का पालन करें।

अलका अग्रवाल सिगतिया

व्यंग्य

"पियक्कड़ों को देश की अर्थव्यवस्था ने आज पुकारा है। देश ने पुकारा है तो जाना ही पड़ेगा। ...राज्य का राजस्व बढ़ाने के लिए खुद का खजाना खाली करना पड़े तो क्या गम है? उनकी पत्नियों की आंखों से खुशी के आंसू बहने लगे। वे अपने पतियों की कल्पना सैनिकों की वर्दी में करने लगे।"

बहाना

वो मैडम जो इस बात से परेशान रहती थीं कि लोग उनके पति को बेवड़ा कहते हैं। उनका परिचय कराने में भी हिचकती थी। बड़े शान से न्यूज़ चैनल के स्क्रीनशॉट पूरे सोशल मीडिया पर इस टैग लाइन के साथ चस्पा करी हैं 'प्राऊड वाइफ' जिसमें उनके पति लाइन में खड़े सोशल डिस्टैंसिंग की धज्जियां उड़ा रहे हैं। वे न्यूज़ चैनल को ट्वीट कर रही हैं कि उनके डियर हबी को पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया जाए, वे अपनी जान की परवाह किए बगैर इसलिए युद्ध कर रहे हैं ताकि देश की अर्थव्यवस्था को सहारा दिया जा सके। वे सच्चे राज्य भक्त और देशभक्त हैं। गरीबों को खाना खिलाने में, राशन देने में सरकार का खजाना खाली हो गया। व्हाट्सएप पर भी पढ़ रहे थे 'इन फॉटी फाइव डेज विदाउट लिकर, बट गवर्नमेंट कान्ट'। जिन्होंने अर्थव्यवस्था में सहयोग करने के लिए शराब खरीदी उन्हें युगों युगों तक याद किया जाएगा।

इतिहास में शामिल होने का अवसर भला क्यों छोड़ा जाए। मैडम जी ने लिखा मेरे 'हबी' ऐतिहासिक काम कर रहे हैं। सरकार को इन शराबियों की जरूरत हमेशा रहती है। चुनाव के समय फ्री में पीकर सरकार बदलते हैं और खरीद कर पिएंगे तो अर्थव्यवस्था बदल देंगे। और यह सब पढ़कर यह सब शराब बांकुरे पड़े थे और इसकी सेटेलाइट पिक्चर देखकर मिस्टर ट्रंप ने भाषण दे डाला 'इंडिया को कोरोना का वैस्किन मिल गया है और वह बता नहीं रहा है।' इस बात से भारत और अमेरिका के रिश्ते बिगड़ सकते हैं। यहीं नहीं कुछ लोगों के रिश्ते रिश्तेदारों से भी बिगड़ रहे हैं। किसी रिश्तेदार की मौत पर बीस लोग भी इकट्ठे नहीं हो सकते थे पर शराब की क्यू में देखकर रिश्तेदारों ने अपने रिश्ते तोड़ लिए, मौत के गम में शामिल नहीं हुए लेकिन अपना गम कम करने के लिए इतनी देर तक गर्मी में भुने जा रहे हैं। वैज्ञानिक इस बात पर भी रिसर्च कर रहे हैं कि ठंड में नोटबंदी की लाइन में कुछ लोग अल्लाह को प्यारे हो गए, पर भरी गर्मी में इन्हें कुछ ना हुआ।

कुछ दिनों पहले के सोशल मीडिया के फ्लैश बैक पर जाना जरूरी है ताकि इस ऐतिहासिक घटना को संपूर्ण परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके। जब से लॉकडाउन हुआ पूरा सोशल मीडिया शराबी हो गया था। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टा सब पर शराब और शराबी के गाने और शेर चस्पा हो रहे थे। ऑनलाइन फेंटेसी से कुछ लोग शराब पीने का मुगालता पाल रहे थे जैसे पहले महिलाएं साड़ी की फोटोज के साथ एक दूसरे को टैग कर रही थीं। अब शराब की खाली ग्लासों में कोल्ड ड्रिंक या शरबत भरकर टैगिंग चल रही थी। ज्यादा समझदार और समर्थ लोगों ने शराब का भी कुछ स्टॉक जमा कर लिया था क्योंकि वे समझ गए थे लॉकडाउन कुछ महीनों के लिए उनकी लाइफस्टाइल में शामिल होने आ गया है

और शराब के बगैर रह नहीं पाएंगे। कुछ नहीं कर पाए तो शराब वाले जब शराब पीने के टिक टॉक बना रहे थे बड़ी शान से चुराए शेर सुना रहे थे।

मैं शराबी हूं बड़ी शान से कहता हूं
जो पीते नहीं, वे मर जाते हैं

ये बिना शराब वाले शाम की चाय के साथ खाने के साथ वीडियो बना रहे थे। इनकी भी शामें शुरू होती थीं मयखाने से, शराब से, साकी से, जाम से। अब अंगूर की बेटी की जगह अन्य पीकर ही संतोष कर रहे हैं और शराब वाले दोस्तों को नसीहतें दे रहे हैं- शराब छोड़ दो यारो! पर वे दोस्त जवाब में कह रहे थे शराब चीज ही ऐसी है ना छोड़ी जाए।

कुछ शराबियों को बिना शराब के दौरे पड़ने लगे थे। घरेलू हिंसा के रिकॉर्ड बन रहे थे। शराब प्रेमी अब प्रेमिका के विरह के नहीं बल्कि शराब की विरह के गीत लिख रहे थे।

दीवाने हो गए, नहीं मिलती अब शराब
तेरे दीदार को तरस गए, वो प्रियतमा शराब।

पर दूसरी ओर कुछ दार्शनिक पियक्कड जगजीत जी ये गजल गुनगुना रहे थे-

तुम नहीं, ग़म नहीं, शराब नहीं
ऐसी तन्हाई का जवाब नहीं

इसका भावार्थ यह है जब वे अपनी माशूका से मिलते थे तो शराब पीना मजबूरी थी क्योंकि माशूका के नखरे उठाने में गम और परेशानी होती थी। अब लॉकडाउन में माशूका से नहीं मिलते तो कोई ग़म नहीं इसलिए शराब नहीं पी रहे, और लॉकडाउन की इस तन्हाई को एंजॉय कर रहे हैं।

कुछ जो अपनी पत्नियों की आंखों को सुंदर मानते थे, उनकी आंखों को धोकर पीने लगे हैं। जो पत्नी और सुंदरता को विरोधाभासी मानते हैं वे चलयंत्र याने मोबाइल पर सुंदरियों के दर्शन कर कृतार्थ हो रहे हैं। उनकी आंखों के पास से मोबाइल को धोकर बूंद- बूंद पी रहे हैं और मस्ती में गा रहे हैं-

ये हल्का-हल्का सुरूर है,
तेरी नज़रों का कुसूर है
या फिर-
तेरी निगाह से ऐसी शराब पी मैंने
कि फिर ना होश का दावा किया मैंने।

यह सब देखकर सरकार के होश उड़ गए, खास राज्य सरकारों के। ये शराबी अगर सुधर गए, सुंदर आंखों से पीकर ही मदहोश होने लगे तो शराब से आने वाले भारी भरकम राजस्व का क्या होगा। सुंदर आंखों पर तो कर नहीं लगा सकते। सरकारों ने व्हाट्सएप पर सर्कुलेट किया- 'प्यारे बेवड़ों वापस आओ, जो नहीं पीते वो भी आओ। तुम्हें राज्य का राजस्व बुलाता है।' राज्य सरकारों ने भी आनन-फानन में शराब की दुकानें खोल दीं। कुछ जांबाज बड़ी हुई दाढ़ियों के साथ, कुछ शेव, शूज के साथ युद्ध मैदान की ओर निकलने लगे। घर वालों ने विरोध किया तो फिर शायरी की टांग तोड़ी-

मैं पीता नहीं पीने बुलाया गया है
इस समय देश को जरूरत है मेरी।

किस्मत में लिखा था पी, तो पीना ही पड़ेगा वरना किस्मत का लिखा गलत हो जाता। पत्नी ने बेलन दिखाई, पिता ने डांट लगाई, तो धार्मिक प्रवचन किया। आप लोग शराब की महिमा नहीं जानते, यह तो सुरो और देवताओं का पेय है, इसलिए ही तो सुरापान करते हैं। देवी मां भी मदिरापान करके दानवों का संहार करती हैं। इस समय कोरोना नाम के दानव ने त्राहि-त्राहि मचा रखी है। मुझे मदिरापान करना ही पड़ेगा। बेलन से कुटाई करने वाली धर्मपत्नी, धर्म के नाम पर समझ गई और पतिदेव का तिलक किया। एक अपनी पत्नी को समझा रहे थे अल्कोहल वाले सैनिटाइजर से हाथ धोकर कोरोना को हरा सकते हैं तो सोचो अल्कोहल पी लेंगे तो पूरे के पूरे सैनिटाइज हो जाएंगे। मीडिया पर सैनिटाइजर की शक्ति को देख कुछ लोग इतने प्रभावित हुए थे घर का सैनिटाइजर ही पीकर खत्म करने लगे थे, उनके घर वालों ने भी अनुमति दे दी। पर अमर्त्य सेन जैसी आर्थिक समझ रखने वालों को इन तर्कों से समझाना आसान न था। उन्हें पियक्कडों ने यू समझाया, देश की अर्थव्यवस्था ने आज उन्हें पुकारा है। देश ने पुकारा है तो जाना ही पड़ेगा। शराब हो या जहर तो देश के लिए पीना ही पड़ेगा। देश की अर्थव्यवस्था को सहारा देना है। भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए, अर्थतंत्र को मजबूत बनाने के लिए उन्हें जाना होगा। राज्य का राजस्व बढ़ाने के लिए खुद का खजाना खाली करना पड़े तो क्या गम है? उनकी पत्नियों की आंखों से खुशी के आंसू बहने लगे। वे अपने पतियों की कल्पना सैनिकों की वर्दी में करने लगे।

कुछ ने इसलिए राहत की सांस ली की उनके पति छः सौ रुपए की वाइन तीन, चार हजार में खरीद रहे थे। कुछ महंगी स्कॉच पीने लगे थे। बच्चों की पढ़ाई के लिए जमा पैसे शराब में बहाए जा रहे थे। पर यहां भी दो गुट बन गए। एक इस पक्ष में था जो महिला अधिकारों का परचम लेकर खड़ा जाता है उनका कहना था शराब पीकर ये आदमी फिर शैतान बनकर मार पिटाई करेंगे। दूसरा गुट वह जो कह रहा था बिना शराब के ये ज्यादा शैतान बन गए थे। मुंबई में कुछ ऐसी दुकानें भी थीं, जहां महिलाएं शराब की लाइन में लगी थीं। खुद दबाकर पीने वालों ने कहा- इनको शर्म नहीं आती, शराब पीती हैं। तो भई यह तो वह बात हुई तुम्हारा खून- खून है हमारा खून पानी। क्यों नहीं पी सकती ये? देवी मां भी तो मदिरापान करती है। पर सच के पीछे का सच यह था कि

उनमें से कुछ अपनी जान दांव पर लगाकर पति या बेटे के लिए शराब खरीद रही थीं।

एक सीक्रेट बात बता दें हम भी लाइन में दिख गए कुछ लोगों को और हमें लोग मैसेज पर मैसेज करने लगे। अब हम क्या सफाई दे कि शराबियों की लाइन कि हमारे घर तक आती थी। घर में सब एक दूसरे से कहते रहते थे सामान लेने तू जा, तू जा। पर उस रोज सब ने कहा- मैं ले आता हूं। कोई दूध लेने निकला, कोई अनाज, मिले सारे शराब की दुकान के पास।

कोई किसी पर उंगली नहीं उठा सकता जैसे कोई भी राज्य, दूसरे राज्य पर कहां उठा रहा है। सब तो एक थाली के चट्टेबट्टे हैं। पहली बार देश में सारे राज्यों ने एकता दिखाई, शराब के मामले में अब हमारा मन देशभक्ति से सराबोर होकर गा उठा। हम सब एक हैं। सब जानते हैं शराब ही की कमाई वैट से आती है। मंत्रियों के शौक भी तभी पूरे होंगे जब राज्य मालामाल होंगे वैसे अब भी बहुत से मंत्री इतने अमीर हैं, कि अपने माल से ही राज्य के गरीबों को साल भर खाना खिला सकते हैं।

शराब के बिना बहुत से लेखक और पत्रकार परेशान थे क्योंकि इनका कहना है लेखक को चाहिए कलम में सियाही और रगों में शराब। यह हर लेखक के लिए नहीं पर कुछ लेखक बिना पीए जी नहीं सकते, लिख भी नहीं सकते। शराब की दुकानें खुलने की बात पर इस तबके में भी हलचल मच गई। सोचा भीड़ कम होगी तो ले आएंगे। पर हाय री किस्मत दूसरा दिन नसीब ही नहीं हुआ तो फिर यह शराब के शेरों से ही अपना गम बिसरने लगे। एक दोहेकार ने लिखा-

बंद दुकानें खुल गईं, बिकने लगी शराब
लंबी-लंबी लाइनें कहते रहो खराब
इंतजार खत्म होगा मिलन फिर तुमसे होगा
हे मदिरा तुम प्रेयसी तुमसे वियोग सहन ना होगा।

पर सरकार ने अगर ये दुकानें खोलीं तो क्यों खोलीं। जानेंगे तो सरकार पर फूल बरसाएंगे। पता है केरल में शराब के गम में एक परिवार के नौ लोगों ने आत्महत्या कर ली। कर्नाटक में एक मजदूर ने खुदखुशी कर ली। तलाक और घरेलू हिंसा बढ़ने लगी। सरकार का दिल पिघल गया। और शराब की दुकानें खोलने का निर्णय लेना पड़ा। एक बात दीगर है कि 'किलिंग टू बर्ड्स विथ वन स्टोन' वाला मामला हो गया। पियक्कड़ भी खुश होंगे। खजाना भी भरेगा जिनके पास पैसा है वही तो खरीदेंगे।

अब यहां जो भीड़ है उसका विश्लेषण भी बता दें। शराबी दो तरह के होते हैं- पहले वे जो 'जॉय ऑफ ड्रिंकिंग' वाले हैं। कभी-कभी सेल्फ सैटिफेक्शन के लिए पीते हैं। ऐसे लोग 'टॉनिक' जैसी दुकानों के सामने खड़े होकर सभ्यता से खरीद रहे थे। दूसरे वे जो नशे के लिए शराब पीते हैं। ये लोग सोशल डिस्टसिंग की धज्जियां उड़ा रहे थे। मार पिटाई गालीगलौज़ कर रहे थे। चड्डियां फाड़ रहे थे। तीसरे वे जो ब्लैक मार्केटिंग करने के लिए खरीद रहे थे।

पर हां ये सब झूम बराबर झूम शराबी, या हमका पीनी है, पीनी है, हमका पीनी गाकर राज्यों की मरणासन्न अर्थव्यवस्था को म्यूजिक थेरेपी से ठीक कर रहे थे। पर सरकार ने सोचा नहीं था कि सिर मुंडाते ही ओले पड़ जाएंगे। ऐसे नज़ारे सामने आएंगे जिनको देख शर्म वालों की नजरें शर्म से झुक जाएंगी। वे सोच में पड़ जाएंगे, क्या इसलिए थाली बजाई थी, दीप जलाए थे? भारत की इन तस्वीरों पर विदेशों में क्या प्रतिक्रिया हुई होगी। तौबा-तौबा! खैर आनन-फानन में दुकानें बंद करनी पड़ीं। अब शराब के तलबगार नए नए सजेशंस दे रहे हैं। चाहते हैं इन्हें सरकार तक पहुंचाया जाए।

सजेशन नंबर एक- जिनके मोबाइल नंबर का अंतिम डिजिट एक है उन्हें १ तारीख को बुलाए। जिनका दो उन्हें २ तारीख को बुलाए। इसी तरह सब को बुलाए।

सजेशन नंबर दो- विदेशों में जैसे शराब एसेशियल्स के साथ मिलती है भारत में भी मिले।

सजेशन नंबर तीन- फैमिली डॉक्टर प्रिस्क्रीप्शन में अपने पेशेंट को शराब प्रिस्क्राइब करें।

सजेशन नंबर चार - जरूरी सामानों की तरह शराब की होम डिलीवरी कराई जाए।

सजेशन नंबर पांच- अगली बार जब दुकानें खोली जाए इस बात का ध्यान जरूर रखा जाए कि एक तरफ़ माशूका का घर हो दूसरी और शराब की दुकान।

कुछ किस्मत वाले थे, जहां से लाइन शुरू हुई थी, वहां प्रेमिका का घर था। खिड़की पर खड़ी प्रेमिका का दीदार भी कर लिया था, दूसरी ओर मयकदा था ही। बिना पुट्ठे पर पुलिस का डंडा खाए बिना सड़क पर लोट लगाए माशूका को भी देख लिया, जाम होठों से लगा लिया।

जो शराबियों को कोस रहे हैं उनके लिए इनका संदेश यह है-

नशे में कौन नहीं है, ये बताओ जरा किसी को दौलत का नशा है, किसी को सत्ता का, किसी को रूप का नशा है, किसी को कायदे का।

हम भी उनके इस तर्क से सहमत हैं, सरकार भी। इनके गम से गमगीन सरकार को अपने खजाने की भी चिंता है। अब सरकार क्या कदम उठाती है देखेंगे 'हम लोग'।

९८६९५५५१९४

हिंदी विवेक मासिक की सदस्यता ग्रहण करने तथा विज्ञापन के लिए जिला प्रतिनिधियों से संपर्क करें।

क्र.	जिला/शहर	प्रतिनिधी	संपर्क
१.	गडचिरोली	श्री.गजानन डोंगरे	९३७३३९५६२२
२.	घाटकोपर	श्री.नवलकिशोर पुराणिक	९९२०१४४८४०
३.	विक्रोळी	श्री.कृष्णचंद्र प्रधान	९७६९५९६७५२
४.	विक्रोळी	श्री.रघुनाथ काले	९९६९४९७२७८
५.	मुलुंड	श्री.राजाभाऊ अचार्य	९६९९१५५१२१
६.	मुलुंड	श्री.संतोष कुलकर्णी	९८६९९०३८४८
७.	मुलुंड	श्री.सुरेश सालवी	९३२४०८२५०५
८.	मिरारोड	श्री.नारायणदास मोहता	६३७७६७७७६४
९.	अंधेरी	श्री.इंद्रसेन सिंह	९८६९७२७८७२
१०.	अंधेरी	श्री.गणपत रहाटे	९८६९४६६९८१
११.	जोगेश्वरी	सौ.मानसी नगरकर	९५९४९६१८४७
१२.	मालाड	श्री.हरीश जालान	९८६९१८२२२२
१३.	भांडूप	श्री.सुनील दुबे	९८६७११५२८०
१४.	कांदिवली	श्री.जगदिश बोभाटे	९९६९०८६१८९
१५.	कांदिवली	श्री.जे.पी.यादव	९८१९४४००९४
१६.	बोरिवली	श्री.हसमुखभाई मकवाणा	९८९२१३४८५५
१७.	दहिसर	श्री.मुकुंद भगुरकर	९२२४१८५४८३
१८.	मिरारोड(पू.)	श्री.जगन्नाथ म्हात्रे	९९६९००५६७३
१९.	मिरारोड(प.)	श्री.राधेश्याम शुक्ला	७९७७३३४९०६
२०.	भाईंदर	श्री. कमलेश चौधरी	९८९२१२१६२४
२१.	नालासोपारा	श्री.विलास मेस्त्री	८९७५६०४५५३
२२.	वसई	श्री.संतोष शिंदे	८६५२४१५०१५
२३.	नालासोपारा	श्री.संकुल पाठक	८६५२४८८९८८
२४.	बोईसर	श्री.विनोदकुमार वाजपेयी	९८९०१७२११५
२५.	इंदौर	श्री. मनीष शर्मा	७९९९६०६४८४
२६.	पालघर	श्री.हर्षल भानुशाली	९६१९८०००३०
२७.	ठाणे	श्री.भालचंद्र सातार्डेकर	९०२२२०६४८९
२८.	कलवा	श्री.रविंद्र कराडकर	९८९२१७७८८२
२९.	डोंबिवली	श्री.महादेव जोशी	९७०२४९३६२३
३०.	कल्याण	श्री.अनिल तिवारी	७६६६०९६६६४
३१	सोलापूर(मंगळवेढा)	श्री.दत्तात्रय ताम्हणकर	९४२०५०८८५१
३२.	भिवंडी	श्री.मिलिंद कुलकर्णी	९७६७९४६११८
३३.	नवी मुंबई	श्री.गुरूराज कुलकर्णी	८८७९७५०५३८
३४.	रोहे	श्री.माधव भावे	०२१९४२३४२०९
३५.	मुरुडजंजीरा	श्री.मेघराज जाधव	९४२११६४७७७
३६.	रत्नागिरी	श्री.मृगांक साठे	९४२११४२६४८
३७.	संगमनेर	श्री.विजय भिडे	९९७५५१६३६०
३८.	पुणे	श्री.चंद्रशेखर ओक	०२०२४४९२७६१
३९.	पुणे	श्री.विजयराव काले	९८५०२३९८१३
४०.	आकुर्डी, पुणे	श्री.चंद्रकांत तेली	९४२१००८७२७
४१.	कोथरुड, पुणे	श्री.वासुदेव कुंटे	०२०-२५३८७२२५
४२.	बारामती	श्री.भाऊसाहेब पांडकर	९२७२५५१९६७
४३.	सांगली	श्री.सुहास कुलकर्णी	९८९०९०९०१२
४४.	इचलकरंजी	श्री.प्रशांत कुलकर्णी	९४२११७२९६५
४५.	कोल्हापूर	श्री.माधव कुंभोजकर	७३८५४२७७६१
४६.	कोल्हापूर	श्री.सुरेश रोकडे	९२७१५४८१४४
४७.	गोंदिया	श्री. दुर्गेश गंगभोज	९६३७५२६०२२
४८.	गोंदिया	श्री.अनिल बिसेन	९८५०३०७६०३
४९.	सोलापुर	श्री.चंद्रकांत धोंडे	९८८११३९१५०
५०.	येवला	श्री.अनिल सुर्यवंशी	९८५०५५२५२१
५१.	मालेगाव	श्री. शिरीष सोनावणे	९८९०९२१४८५
५२.	मनमाड	श्री.प्रमोद मुले	९४२१५०९२४२
५३.	नाशिक	श्री.नितीन सुरेश बिबीकर	९६६५७७८४९७
५४.	तलोदे	श्री.चंद्रकांत मगरे	९०११९०१२२०
५५.	रावेर	श्री.भालचंद्र जडे	९८६००२४३६९
५६.	अमलनेर	मा.सुरेखा निकुंभ	९४२१६३९०७८
५७.	जळगाव	श्री. राजेन्द्र कानडे	८२३७६५७१७८
५८.	भुसावल	श्री.राजेन्द्र कुलकर्णी	९४२२५८९५९६
५९.	अकोला	श्री.किर्तीकुमार वर्मा	९४२३२५९६९९
६०.	लातुर	श्री.विलास आराध्ये	९४२३०७५६९७
६१.	लातुर	श्री.विश्वासराव देशमुख	९४२१४४७९१५
६२.	बीड	श्री.विष्णु कुलकर्णी	९४२२२४०८२६
६३.	जालना	श्री.अमोल दब्बडवार	९५०३२९९४४९
६४.	संभाजीनगर	श्री.योगेश भोसले	९४२१७०४११६
६५.	संभाजीनगर	श्री.रेणुकादास देशमुख	९४२२४८४२४२
६६.	नांदेड	श्री.सनतकुमार महाजन	९४२३४४०७८३
६७.	चिखली	श्री.अरविंद असोलकर	९४०४०३३४५३
६८.	खामगांव	श्री.प्रशांत वाणी	९४२०१४७१९९
७९.	खामगांव	श्री.दत्तात्रय कंझारकर	९४२१४६८१६९
७०.	यवतमाल	श्री.रमेश चव्हाण	९४२१७७४८२४
७१.	बालापूर	श्री.मोहन धरमठोक	९४२२१६२३७१
७२.	अकोला	श्री.अविनाश अंजनकर	९४२०४१९८५५
७३.	चंद्रपूर	श्री.संजय दाणेकर	९४२२९०९८२२
७४.	अमरावती	श्री.सुनिल वेलूकर	७२७६०३९९८४
७५.	वर्धा	श्री.विलास भास्करवार	९३७१८९५५२४
७६.	सोलापूर	श्री.रसिकभाई टांक	९४२२६०२४३२
७७.	नंदूरबार (शहादा)	श्री.नरोत्तम पटेल	९४२१५३०३९८
७८.	जालोर	श्री.मोहनलाल देवासी	९६०२८२४१९५
७९.	बरहाणपूर	श्री.अंकुश जाधव	९४२१४०४२१९
८०.	भोपाल	श्री.प्रवीण पराशर	९९९३००६१३७
८१.	जबलपूर	श्री.मनोज कुशवाह	९८२६१४५०७६
८२.	जयपूर	श्री.ईश्वर बैरागी	७५९७८९२४९५
८३.	मथुरा	श्री. खेमचंद यदुवंशी	७५००४३७७०६
८४.	वाराणसी	श्री.अखिलेश सिंह - चंदेल	९३८९५४७४२८
८५.	चिंचवड	श्री.शशिकांत शिराळकर	९७६३७७५३३३
८६.	अहमदाबाद	श्री.धीरेन बारोट	९६८७१८३७३४
८७.	रांची	श्री. राजेश अग्रवाल	९४३०२०२८७०
८८.	वापी	श्री.के.एस.चौबे	९८२४१९१११०
८९.	हैद्राबाद	श्री.भास्कर जोशी	८००८६०९५३१
९०.	रीवां, म.प्र.	श्री.गयाप्रसाद श्रीवास	९२०३०५३३४१
९१.	कोलकाता	श्री.राजीव शरण	९४३२४२१०१२
९२.	कोलकाता	श्री.गणेश राऊत	९४३२३०५७३७
९३.	कोलकाता	श्री. देबु दास	९०३८५७४६०१
९४.	कोलकाता	श्री.दिपक गांगुली	९३३२१५४६८०
९५.	गोवा	मा.नितीन देसाई	९७६५३९११०८
९६.	गोवा	श्री.तुलसीदास कामत	९८३२-२६४०८०१
९७.	भाईंदर	श्री. मितनारायण यादव	९३२४२१२६२४

पंचवार्षिक, त्रैवार्षिक तथा वार्षिक शुल्क भरकर स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करके पाठक इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। सदस्यता शुल्क पंचवार्षिक १२००, त्रैवार्षिक ७०० तथा वार्षिक ३००, विदेशी सदस्यता शुल्क ३००० रूपये, निर्धारित किया गया हैं।सदस्यता शुल्क भेजने के इच्छुक पाठक नीचे लिखे ई-मेल से भी संपर्क स्थापित कर सकते हैं और हिंदी विवेक के बँक ऑफ महाराष्ट्र के खाते मे जमा कर सकते हैं। खाता नं. ६००८५१०८०००, शाखा प्रभादेवी। चेक व डी.डी. आप 'हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था - हिंदी विवेक' के नाम से भेजिए। ई-मेल- hindivivekvargani@gmail.com

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
www.tjsbbank.co.in | Toll Free: 1800 223 466

Minor Account Opening

You are never too young for your first bank account

TJSB Bank presents Savings Accounts for Minors

- ATM Debit card for Children aged 10-18
- Maximum withdrawal limit ₹ 5000 per day
- Cheque book facility*

*T&C apply

Administrative & Registered Office : TJSB House, Plot No. B-5, Road No.2, Wagle Industrial Estate, Thane (W) - 400604

HINDI VIVEK/MONTHLY: Postal Reg. **No.MCW/286/2018-20** Date Of Publication : 27th Of every previous month. License to post without prepayment under "WPP license No" **MR/Tech/WPP-187/West/2018-20**,RNI Rg.No. MAH HIN/2010/36682, Posted at : Mumbai Patrika channel sorting Offce, Mumbai - 400001 on 29th & 30th of every previous month.

'हिंदी विवेक' मासिक पत्रिका, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक दिलीप दामोदर करंबेलकर द्वारा हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था हेतु विवेक मुद्रणालय, ५ कामत इंडस्ट्रियल इस्टेट, ३९६, स्वा. वीर सावरकर मार्ग, प्रभादेवी, मुंबई- ४०००२५ में मुद्रित एवं प्रकाशित।